EDU TERIA

E - D.N.A

Daily Newspaper Analysis

Prelims Mains Essay

By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 24 December 2025

सम्मान

नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार 2025 समारोह के दौरान इंस्टीट्यूट आफ केमिकल टेक्नोलाजी के कुलपति अनिरुद्ध भालचंद्र पंडित को विज्ञान श्री पुरस्कार प्रदान करतीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू।

Jansatta Page No-8

अपोलो 8 मिशन के चालक दल ने पहली बार चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया

1968 में आज ही पहली बार नासा के अपोलो 8 मिशन के चालक दल, फ्रैंक बोरमैन, जिम लवेल और बिल एंडर्स ने चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया था। इस मिशन ने साबित कर दिया कि मनुष्य चांद पर जा सकते हैं और अपोलो 11 के चंद्रमा पर उतरने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

पहली बार किसी रेडियोधर्मी आइसोटोप से किया गया रोग का उपचार

1936 में आज ही अमेरिका में पहली बार रेडियोधर्मी आइसोटोप का इस्तेमाल दवा के रूप में किया गया था। चिकित्सक-भौतिक विज्ञानी जान एच लारेंस ने ल्यूकेमिया के एक मरीज का इलाज फास्फोरस-32 से किया था। इससे आधुनिक परमाणु चिकित्सा युग की शुरुआत हुई।

Dainik Jagaran Page No-14

राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार से 24 वैज्ञानिक सम्मानित

उपलब्धि

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित समारोह में 24 वैज्ञानिकों और एक वैज्ञानिक टीम को राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार से सम्मानित किया। ये पुरस्कार विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय और प्रेरणादायक योगदान के लिए प्रदान किए गए।

प्रसिद्ध खगोल भौतिक विज्ञानी जयंत नार्लीकर को ब्रह्मांड विज्ञान में योगदान और विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मरणोपरांत 'विज्ञान रत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी ओर से पुणे स्थित अंतर-विश्वविद्यालय खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी केंद्र (आईयूसीएए) के निदेशक आर. श्रीआनंद ने ग्रहण किया।

राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार के दूसरे संस्करण में चार श्रेणियों, विज्ञान रत्न, विज्ञान श्री, विज्ञान युवा और विज्ञान टीम में सम्मान दिए गए। कृषि विज्ञान के क्षेत्र में योगदान के लिए प्रसिद्ध गेहूं वैज्ञानिक ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह को 'विज्ञान श्री' पुरस्कार प्रदान किया गया। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के भौतिकी समूह के निदेशक यूसुफ मोहम्मद शेख को भी सम्मान मिला। जैविक विज्ञान के क्षेत्र में के. थंगराज, रसायन विज्ञान में आईआईटी मद्रास के प्रदीप थलप्पिल, अभियांत्रिकी विज्ञान में रसायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान के कुलपति अनिरुद्ध भालचंद्र पंडित और पर्यावरण विज्ञान में राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक एस. वेंकट मोहन को 'विज्ञान श्री' से सम्मानित किया गया। गणित एवं कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के प्रोफेसर महान महाराज तथा अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तरल प्रणोदन प्रणाली केंद्र के जयन एन को भी 'विज्ञान श्री' पुरस्कार दिया गया। विज्ञान युवा पुरस्कार कृषि विज्ञान में जगदीश गुप्ता को प्रदान किया गया।

नई दिल्ली में मंगलवार को आईआईटी कानपुर के भौतिक विभाग के प्रो. अमित कुमार अग्रवाल को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया।

अमित अग्रवाल को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार

दुनिया में क्वांटम फिजिक्स में अभूतपूर्व योगदान देने वाले आईआईटी कानपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक व भौतिक विभाग के प्रो. अमित कुमार अग्रवाल को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार 2025 के तहत विज्ञान युवा शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार देश में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दिए जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। वह आईआईएससी के सेंटर फॉर हाई एनर्जी फिजिक्स के पहले पूर्व छात्र हैं जिन्हें यह राष्ट्रीय सम्मान मिला है।

Hindustan Page No-17

दो बार के ओलिंपिक पदक विजेता हैं भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा

नीरज चोपड़ा का जन्म 1997 में आज ही पानीपत में हुआ था। अधिक वजन की वजह से जिम जाना शुरू किया। पास के शिवाजी स्टेडियम में अपनी उम्र के अन्य बच्चों को भाला फेंकते देख उनके मन में इस खेल के प्रति रुचि जगी। 2014 में बैंकाक में युवा ओलिंपिक खेलों की क्वालीफाइंग प्रतियोगिता में रजत पदक जीता। 2016 में आइएएएफ वर्ल्ड अंडर-20 चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने के बाद प्रसिद्धि प्राप्त की। टोक्यो 2020 ओलिंपिक में पुरुषों की भाला फेंक श्रेणी में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। 2024 पेरिस ओलिंपिक में रजत अपने नाम किया।

Dainik Jagaran Page No-14

प्रजातियों की खोज की गति पहले से कहीं अधिक तेज

अध्ययन ▶ हर वर्ष 16,000 से अधिक नई प्रजातियों की पहचान कर रहे हैं विज्ञानी, संरक्षण में होगी सुविधा

पौधे, मकड़ियों, मछलियों और उभयचर जीवों में विविधता पहले से ज्यादा समृद्ध

नई दिल्ली, प्रेट : एक नए अध्ययन में पाया गया है कि प्रजातियों की खोज की गति पहले से कहीं अधिक तेज हो गई है। यह उपक्रम प्रजातियों के विलुप्त होने से बचाने की रणनीति तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। इससे जैव विविधता को संजोने व समृद्ध करने में सहायता मिलेगी। बताया गया है कि विज्ञानी हर वर्ष 16,000 से अधिक नई प्रजातियों की पहचान कर रहे हैं।

एरिजोना यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने लगभग 20 लाख प्रजातियों के वर्गीकरण इतिहास का अध्ययन किया है, जिसमें सभी जीवित जीवों के समूह शामिल हैं। जर्नल साइंस एडवांसेस में प्रकाशित निष्कर्षों के अनुसार, 2015 से 2020 के बीच - जो हाल के समय का सबसे व्यापक डाटा है - हर वर्ष औसतन 16,000 से अधिक नई प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया गया, जिसमें 10,000 से अधिक जानवर, 2,500 पौधे और 2,000 फंगस शामिल हैं।

एरिजोना यूनिवर्सिटी के पारिस्थितिकी और विकासात्मक जीव विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और इस अध्ययन के वरिष्ठ लेखक जान बीयन्स के मुताबिक, नई प्रजातियों की खोज इसलिए महत्वपूर्ण है कि प्रजातियों को वैज्ञानिक रूप से वर्णित किए बिना उनकी रक्षा नहीं की जा सकती। इस दिशा में दस्तावेजीकरण पहला कदम है। यदि हमें नहीं पता कि कोई प्रजाति मौजूद है तो हम उसे

प्रतीकात्मक

विलुप्त होने से नहीं बचा सकते।

लेखक का कहना है कि विज्ञानी ऐसा मानते हैं कि नई प्रजातियों के दस्तावेजीकरण की गति धीमी हो गई है और ऐसा इसलिए कि हम नई प्रजातियों की खोज करने में कोताही कर रहे हैं, लेकिन हमारे परिणाम इसके विपरीत दिखते हैं। बीयन्स के मुताबिक, "वास्तव में, हम पहले से कहीं अधिक तेजी से नई प्रजातियों की खोज कर रहे हैं।" शोधकर्ताओं का यह भी कहना है कि यह प्रवृत्ति धीमी होने के कोई संकेत नहीं दिखाती है और भविष्यवाणी की कि कुछ समूहों, जैसे पौधे, फंगस, मकड़ियों, मछलियों और उभयचर जीवों के बीच जैव विविधता पहले से कहीं अधिक समृद्ध है।

उदाहरण के लिए, टीम ने अनुमान लगाया कि मछलियों की प्रजातियों की संख्या 1,15,000 और उभयचरों की 41,000 हो सकती है, जबकि वर्तमान में केवल लगभग 42,000 मछलियों और 9,000 उभयचरों की प्रजातियां वर्णित हैं। उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि पौधों की अंतिम संख्या पांच लाख से अधिक हो सकती है। शोधकर्ता बताते हैं कि "जीवन के सभी क्षेत्रों में, हमने पाया कि जीवित, वर्णित प्रजातियों की कुल संख्या तेजी से बढ़ रही है, हाल के दशकों में धीमी होने के कोई संकेत नहीं हैं। इसके अलावा, प्रजातियों के वर्णन की सबसे तेज दरें (16,000 से अधिक प्रजातियां प्रति वर्ष) 2015 के बाद से हैं। अधिकतम दर (17,044 प्रजातियां प्रति वर्ष) 2020 में थी।"

शोधकर्ताओं ने यह भी भविष्यवाणी की कि नई जीवों की खोज की दर बढ़ती रहेगी। इस समय, अधिकांश नई प्रजातियां दूरस्थ लक्षणों द्वारा पहचानी जाती हैं। लेकिन जैसे-जैसे आणविक उपकरणों में सुधार होगा, हम और भी अधिक गुप्त प्रजातियों का पता लगाएंगे - ऐसे जीव जो केवल आनुवंशिक स्तर पर भिन्न होते हैं। यह विशेष रूप से अद्वितीय बैक्टीरिया और फंगस को उजागर करने के लिए आशाजनक है।

Dainik Jagaran Page No-14

जेन-जी की हुंकार से हिलीं हुकूमतें

वर्ष 2025 भू-राजनीतिक लिहाज से काफी अहम रहा। डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। वहीं दूसरी ओर जेन-जी ने आंदोलन के जरिए नेपाल समेत कई देशों की हुकूमतों को हिला दिया। इस साल रूस- यूक्रेन और इजरायल-हमास संघर्ष खत्म होने की उम्मीद थी, लेकिन सभी कोशिशें नाकाम रहीं। कई जगह मतभेद के चलते सत्ता बदली। खत्म होते साल के साथ दुनियाभर की घटनाओं पर एक नजर ...।

128 विरोध प्रदर्शन दुनिया भर में सरकारों के खिलाफ हुए

70 देशों में विरोध प्रदर्शन का दायरा बहुत अधिक रहा

35 से अधिक विरोध प्रदर्शन दुनियाभर में अब भी जारी

02 लाख से अधिक लोग विरोध और हिंसा में मारे गए

58.6 करोड़ डॉलर की क्षति नेपाल को जेन-जी आंदोलन से हुई

जेन-जी आंदोलन के दौरान नेपाल की राजधानी काठमांडू में प्रदर्शनकारियों ने ऐतिहासिक सिंहदरबार परिसर स्थित प्रधानमंत्री कार्यालय को आग के हवाले कर दिया था।

नेपाल: सोशल मीडिया पर सख्ती तो जेन-जी आग बबूला

प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली नेपाल सरकार ने चार सितंबर को 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रतिबंध लगाया। फैसले के खिलाफ युवाओं में विरोध की सुगबुगाहट शुरू हुई। आठ सितंबर को जेन-जी सड़कों पर उतरे। युवाओं ने काठमांडू की सड़कों पर जमकर बवाल काटा।। सिंह दरबार परिसर में स्थित प्रधानमंत्री कार्यालय, संसद भवन और सरकारी कार्यालयों को फूंक दिया था। युवाओं ने नेताओं और मंत्रियों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। युवाओं के गुस्से को बेकाबू होता देख प्रधानमंत्री ने नौ सितंबर को मंत्रियों के साथ पद से इस्तीफा दे दिया। 13 सितंबर तक चले प्रदर्शन के दौरान गोलीबारी में कुल 76 लोग मारे गए थे।

बुल्गारिया: प्रधानमंत्री कुर्सी छोड़ने को हुए मजबूर

देश में बड़े पैमाने पर फैले भ्रष्टाचार और सियासी मनमानी के खिलाफ जेन-जी एक दिसंबर को राजधानी सोफिया की सड़कों पर उतर गए। एक जनवरी 2026 को बुलगेरिया यूरो जोन में शामिल होने जा रहा था। इससे पहले ही युवाओं के प्रदर्शन ने सरकार हिला दी। नतीजतन प्रधानमंत्री रोसेन जेल्याजकोव को पद से इस्तीफा देना पड़ा।

मेडागास्कर: आक्रोश देख प्रधानमंत्री ने छोड़ा पद

बिजली- पानी में कटौती से निराश युवा 25 सितंबर को सड़कों पर उतरे और 14 अक्तूबर तक प्रदर्शन चला। सुरक्षाबलों से संघर्ष में 22 लोग मारे गए। 29 सितंबर को राष्ट्रपति एंड्री राजोएलिना ने प्रधानमंत्री क्रिस्टिन नेत्से की सरकार को भंग कर दिया। सेना के जनरल रुफिन को नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।

मेक्सिको: मांगें पूरी करने का वादा किया तब शांति

अपराध की बढ़ती घटनाओं के विरोध में जेन-जी 15 नवंबर को सड़कों पर उतरे और जमकर बवाल काटा। पुलिस और युवाओं के बीच हुए संघर्ष में 200 से अधिक लोग घायल हुए। युवाओं ने नेशनल पैलेस में घुसने की कोशिश की। युवाओं का आक्रोश देख सरकार ने वादा किया कि वे सभी मांगों पर विचार करेगी। सांकेतिक प्रदर्शन जारी है।

एससीओ में महाशक्तियों का मिलन

चीन के तियानजिन में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक 31 अगस्त से एक सितंबर के बीच हुई। एससीओ के इतिहास की सबसे बड़ी बैठक में भारत, चीन और रूस जैसी महाशक्तियों का मिलन हुआ। पूरी दुनिया की नजर रही।

जनहित का ख्याल

ब्राजील: महिला सुरक्षा को दी गई वरीयता

महिला सुरक्षा के लिए एक बिल पर हस्ताक्षर हुआ। पति प्रताड़ित करता है तो अदालत आरोपी को घर से बाहर निकालने का आदेश दे सकती है।

कुवैत: शादी की उम्र सीमा को बढ़ाया

बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए कुवैत, पुर्तगाल, बोलिविया, रोमानिया और बुर्किना फासो ने शादी की उम्र को बढ़ाकर 18 साल कर दिया।

ऑस्ट्रेलिया: बच्चों को बचाना प्राथमिकता

16 साल तक के बच्चों को सोशल मीडिया से बचाने के लिए कानून पास हुआ। इस उम्र के बच्चे सोशल मीडिया अकाउंट नहीं बना सकते।

चीन: चेहरे की गोपनीयता बनी रहेगी

चेहरे से जुड़ी जानकारी बगैर अनुमति के साझा नहीं होगी। बीजिंग ने नया कानून बनाया। पहचान साबित करने के दूसरे विकल्प होंगे।

एआई पर सख्ती को सहमत हुई पूरी दुनिया

कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) के बढ़ते दायरे के बीच दुनिया के अधिकतर देश इस आधुनिक तकनीक पर सख्ती को सहमत हुए।

फरवरी में पेरिस में हुए एआई एक्शन समिट में यूरोपीय देशों के साथ भारत और चीन ने एक सुर में कहा वे तकनीक का सुरक्षित इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए नियमों के पक्ष में हैं। वहीं अमेरिका और ब्रिटेन ने इससे दूरी बनाई। दोनों देशों ने कहा कि तकनीक पर सख्ती से नवाचार और आर्थिक विकास का तंत्र प्रभावित हो सकता है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने कहा था कि एआई को सुरक्षित और सभी के लिए स्फूर्तियत भरा बनाने पर जोर देना होगा। सम्मेलन में सहमति बनी थी कि एआई क्षेत्र में सभी को समान अवसर मिले। एआई के निर्माण और इस्तेमाल को लेकर किसी भी असमानता को खत्म करने पर जोर दिया जाए।

उथल-पुथल का दौर...

अमेरिका को महान बनाने के नारे से ट्रंप ने संभाली सत्ता

अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रंप ने 20 जनवरी को शपथ ली। शपथ ग्रहण के बाद उन्होंने 'मेक अमेरिका गेट अगेन' का जिक्र करते कहा कि वे पूरा समय देश को महान बनाने के लिए देंगे। ट्रंप ने जब मौका मिला हमेशा दावा किया कि उन्होंने आठ महीने में आठ युद्ध रुकवाए हैं। अमेरिका ने अपने इतिहास का सबसे लंबा 43 दिन का शटडाउन देखा।

ट्रूडो को छोड़नी पड़ी कुर्सी

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने पार्टी के भीतर विरोध तेज होने के चलते छह जनवरी को पद छोड़ने का ऐलान किया। नौ साल तक प्रधानमंत्री रहे। मार्च 2025 में मार्क कार्नी नए प्रधानमंत्री बने।

फ्रांस के पीएम ने छोड़ा पद

फ्रांस के प्रधानमंत्री सेबास्टियन लेकोर्नू ने 26 दिन के कार्य काल के बाद ही पद छोड़ दिया। पद छोड़ते हुए कहा था, राजनीतिक दलों में मतभेद के बीच काम चुनौतीपूर्ण होता जा रहा।

पहली जापानी महिला पीएम

सनाए ताकैची के रूप में 21 अक्तूबर 2025 को जापान को पहली महिला प्रधानमंत्री मिलीं। शिगेरु इशिबा ने पार्टी में विरोध के चलते पद से इस्तीफा दे दिया था। अक्तूबर 2024 में उन्होंने सत्ता संभाली थी।

अल्बनीज को दूसरा मौका

ऑस्ट्रेलिया के पीएम एंथनी अल्बनीज बीते एक दशक में पहले नेता बने जिन्हें दोबारा प्रधानमंत्री बनने का मौका मिला। मई में हुए चुनाव के दौरान ऑस्ट्रेलियन लेबर पार्टी को 90 सीटें मिली थीं।

वेनेजुएला की मचाडो को नोबेल शांति पुरस्कार

ट्रंप ने दावा किया कि उनकी कोशिशों के चलते कई युद्ध थमे हैं। इस आधार पर वे नोबेल शांति पुरस्कार के मजबूत दावेदार हैं, पर 10 अक्तूबर को जब पुरस्कारों की घोषणा हुई तो वेनेजुएला की लोकतांत्रिक नेता मारिया कोरिना मचाडो के नाम का ऐलान किया गया।

येओल सत्ता से बेदखल

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक येओल ने सत्ता पर नियंत्रण हासिल करने के लिए मार्शल लॉ की साजिश रची। जांच के बाद अप्रैल में महाभियोग के तहत येओल को पद से हटाया गया।

सीनियर स्तर पर नहीं मिले अपेक्षित परिणाम | कुश्ती | भारत ने अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया

जूनियर खिलाड़ियों ने बेहतर भविष्य की उम्मीद जगाई

नई दिल्ली, 23 दिसंबर (भाषा)।

भारतीय कुश्ती के लिए वर्ष 2025 उतार चढ़ाव से भरा रहा जिसमें सीनियर स्तर पर अपेक्षित परिणाम नहीं मिले लेकिन जूनियर स्तर पर किए गए अच्छे प्रदर्शन ने उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद जगाई। सीनियर खिलाड़ियों में अंतिम पंघाल ही अपने प्रदर्शन में निरंतरता बनाए रख पाई। हरियाणा की इस पहलवान ने विश्व चैंपियनशिप में महिलाओं के 53 किलोग्राम भार वर्ग में कांस्य पदक जीतकर इस प्रमुख प्रतियोगिता की पदक तालिका में भारत की उपस्थिति सुनिश्चित की।

पंघाल ने एशियाई चैंपियनशिप में भी तीसरा स्थान हासिल किया, जिससे महाद्वीपीय स्तर पर उनकी साख और बढ़ी। उन्होंने सीनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर वर्ष का शानदार समापन किया। पंघाल का प्रदर्शन देखते हुए उन्हें इस खेल में देश की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सीनियर विश्व चैंपियनशिप में भारत का समग्र प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा, जिसमें उसे केवल एक पदक से संतोष करना पड़ा। यह पदक अंतिम ने कांस्य पदक के रूप में जीता था।

सुजीत कलकल।

सुजीत कलकल ने अपने शानदार रक्षात्मक कौशल से प्रभावित किया और पुरुषों के फ्रीस्टाइल 65 किलोग्राम वर्ग में अपना स्थान पक्का कर लिया है। भारत ने अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया, जिसमें पुरुषों की फ्रीस्टाइल स्पर्धा में सुजीत कलकल का स्वर्ण पदक प्रमुख रहा।

महाद्वीपीय स्तर पर मनीषा भानवाला (62 किलोग्राम) ने एशियाई चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतना रहा। इस साल सभी की निगाह इस पर टिकी थी कि अमन सेहरावत (57 किलोग्राम) के लिए यह सत्र कैसा रहेगा। विश्व चैंपियनशिप में अधिक वजन के कारण उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया गया। इस कारण उन पर प्रतिबंध भी लगा। बाद में अमन ने बिना शर्त माफी मांगी। इसके बाद भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआइ) ने उनका निलंबन वापस ले लिया और वह घरेलू प्रतियोगिताओं में लौट आए।

सकारात्मक पक्ष की बात करें तो सुजीत कलकल ने अपने शानदार रक्षात्मक कौशल से प्रभावित किया और पुरुषों के फ्रीस्टाइल 65 किलोग्राम वर्ग में अपना स्थान पक्का कर लिया है। अंडर-20 विश्व चैंपियनशिप में अधिक वजन होने के कारण महिला पहलवान नेहा सांगवान पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया था। भारत ने अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया। जिसमें पुरुषों की फ्रीस्टाइल स्पर्धा में सुजीत कलकल का स्वर्ण पदक प्रमुख रहा।

Jansatta Page No-24

ट्रंप ने भारत और पाक के बीच परमाणु युद्ध होने से रोकने का दावा दोहराया

नई दिल्ली, 23 दिसंबर (ब्यूरो)।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत-पाकिस्तान संघर्ष को सुलझाने के अपने दावे को दोहराते हुए कहा कि इस्लामाबाद के नेतृत्व ने लाखों लोगों की जान बचाने का श्रेय उन्हें दिया है। ट्रंप ने सोमवार को कहा कि हमने पाकिस्तान और भारत के बीच परमाणु युद्ध होने से रोक दिया।

पाकिस्तान के मुखिया एवं एक अत्यंत सम्मानित जनरल, जो फील्ड मार्शल भी हैं, उन्होंने और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने भी कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने एक करोड़ लोगों की जान बचाई, शायद उससे भी ज्यादा। उन्होंने ये टिप्पणियां फ्लोरिडा के मार-ए-लागो में रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ, नौसेना सचिव जान फेलन और विदेश मंत्री मार्को रुबियो की मौजूदगी में कीं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, 'आप जानते हैं, आठ विमान मार गिराए गए थे। वह युद्ध और तेज होने वाला था और उन्होंने हाल ही में कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने एक करोड़ लोगों की जान बचाई, शायद उससे भी ज्यादा। इसलिए हमने ये सभी युद्ध सुलझा दिए। एकमात्र युद्ध जिसे मैं अभी तक सुलझा नहीं पाया हूं, वह रूस-यूक्रेन का है।'

ट्रंप ने 10 मई को सोशल मीडिया पर यह घोषणा की थी कि अमेरिका की मध्यस्थता में 'देर रात' तक चली बातचीत के बाद भारत और पाकिस्तान 'पूर्ण और तत्काल' संघर्षविराम पर सहमत हो गए हैं। इसके बाद से वह 60 से अधिक बार यह दावा दोहरा चुके हैं कि उन्होंने दोनों पड़ोसी देशों के बीच तनाव 'कम करने में मदद की।' भारत ने किसी भी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप से लगातार इनकार किया है।

Jansatta Page No14

याद रहेगी दीवार की वह खिड़की

विनोद कुमार शुक्ल के न होने की पहली व्यंजना यही है कि भारतीय-हिंदी साहित्य ने अपना एक रत्न गंवा दिया है। वह भारत के साहित्य जगत में सबसे ज्यादा पढ़े गए और सबसे ज्यादा सम्मानित हुए एक लेखक के रूप में सदा याद किए जाएंगे। उनकी रचना में सहजता का ऐसा वैभव है कि जिसे भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे लोकप्रिय रचनाकार की स्मृति में प्रस्तुत है उनके समकालीन साहित्यकार मित्र प्रयाग शुक्ल के कुछ शब्द...

स्मृति शेष
1 जनवरी, 1937
23 दिसंबर, 2025

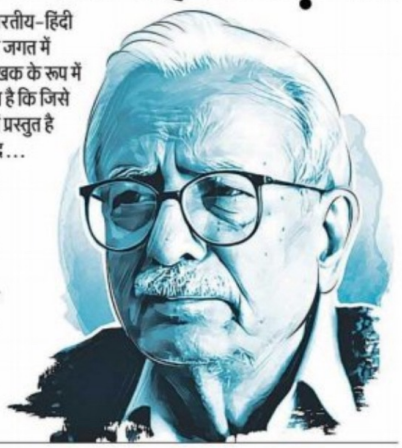

हमारे समय के एक प्रिय रचनाकार विनोद कुमार शुक्ल के न होने की कल्पना मैं नहीं कर पा रहा हूं। लगभग पांच दशक से हमारा साथ था। उनसे पहली गंभीर मुलाकात 1980 के दशक की शुरुआत में भोपाल में हुई थी और तब साथ में कवि अशोक वाजपेयी भी थे। उसके बाद लगातार मुलाकातें होती रहीं, पर अफसोस, अब नहीं होंगी।

उनके साथ मेरी अनंत यादें हैं। आज ऐसा लग रहा है, मानो, मैंने किसी स्वजन को खो दिया है। यह क्षति इस अर्थ में बहुत बड़ी है कि वह हाल के दिनों तक बहुत सक्रिय थे। उनकी कलम अभी थकी नहीं थी।

वह बहुत ही सीधे-सज्जन और सरल हृदय के साहित्यकार थे। वह एक लेखक के रूप में बहुत सजग रहते थे। अपनी रॉयल्टी को लेकर उन्हें उचित ही चिंता रहती थी। मुझे याद है, 1990 के दशक में वह मेरे घर आए थे और मैं उन्हें लेकर उस प्रकाशक के दफ्तर गया था, जिनसे उनका विवाद चल रहा था। यह एक लेखक के रूप में बहुत आवश्यक है कि वह अपने मानदेय को लेकर सचेत रहे। हाल के दिनों में भी रॉयल्टी को लेकर विवाद चलते रहे और यह बहुत सुखद है कि एक प्रकाशन समूह ने उन्हें 30 लाख रुपये की रॉयल्टी से नवाजा। इतनी बड़ी राशि स्वयं उनके शहर रायपुर में उन्हें प्रदान की गई। यह विनोद कुमार शुक्ल ही नहीं, पूरे हिंदी साहित्य जगत के लिए खुशी व गर्व की बात रही और सदा रहेगी।

लेखन की विशेषता : उनकी कविताएं छवियों के साथ सामने आती हैं। जीवंत दृश्यों के सहारे कविता आगे बढ़ती है। उनकी अनेक कविताएं हम साथियों को कंठस्थ हैं। उनकी यह कविता तो बहुत प्रसिद्ध है कि मैं उस आदमी को नहीं जानता था, मैं हताशा को जानता था...। यह कविता इतनी प्रसिद्ध है कि गुरुग्राम में एक कॉरपोरेट कंपनी ने अपनी लाइब्रेरी में इसे दीवार पर लिख रखा है।

उनके लेखन में घर और बाहर बहुत हुआ करता है। घर में आना और घर से जाना। उनके लेखन का सबसे बड़ा पक्ष मुझे यह लगता है कि साधारण या रोजमर्रा के जीवन को जब वह शब्दों में पिरोते हैं, तो वही जीवन हमें चमत्कृत करने वाला हो उठता था। *दीवार में खिड़की रहती थी,* उनका महान उपन्यास है। उनके लेखन में गति है, वह इस दुनिया को ऐसे देखते-दिखाते हैं कि पढ़ने वाला आश्चर्य में पड़ जाता है। आम आदमी यह देखता है कि दीवार में खिड़की होती है, पर वह लिखते हैं – दीवार में खिड़की रहती थी।

पेड़ पर कमरा कहानी को याद कीजिए। उनके लेखन में सहजता का वैभव है। *नौकर की कमीज* में ही देखिए, हर गतिविधि बहुत सुंदर तरह से सामने आती है। जीवन में बहुत सारी चीजें हैं, जिन्हें हम सामान्यतः दर्ज नहीं करते हैं या देखते नहीं हैं, पर उसे विनोद जी देखते और लिखते थे।

मैं उन्हें अक्सर कहा करता था कि आप बच्चों के लिए भी लिखिए और उन्होंने जब बच्चों के लिए लिखना शुरू किया, तब मुझसे मिलकर आभार भी जताया। मुझे बहुत उत्साह के साथ बताया कि आप कहते रहते थे न, देखिए, मैंने बच्चों के लिए लिखना शुरू किया है। मुझे लगता है कि उन्होंने बच्चों के लिए लिखने की शुरुआत देर से की।

वह हमारे साथ के बहुत बड़े लेखक थे। उनसे मेरा इतना अच्छा संबंध था। उनके घर भी मैं गया हूं, वो यादें भी ताजा हो रही हैं। उनका जाना एक बड़ी क्षति है। ध्यान देने की बात है, वह लेखक के रूप में थके नहीं थे। उनका लिखना रुका नहीं था, उनका बोलना, पढ़ना जारी था, इसलिए भी उनके जाने से गहरा दुख है। कोई रचनाकार अगर कुछ रच रहा होता है और चला जाता है, तो वह बड़ी क्षति होती है। उनकी कलम से हमें अभी बहुत कुछ मिल सकता था।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

विनोद कुमार शुक्ल की एक प्रसिद्ध कविता

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

मुख्य सम्मान

'ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिप', 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', 'शिखर सम्मान' (म.प्र. शासन), 'हिंदी गौरव सम्मान' (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान), 'रजा पुरस्कार', 'दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान', 'रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार' तथा 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' के लिए 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार'। वह विश्व स्तर पर भी सम्मानित हुए। उन्हें विश्व साहित्य मे उपलब्धि के लिए वर्ष 2023 में प्रतिष्ठित पेन/नाबोकोव पुरस्कार भी मिला।

मुख्य रचनाएं

नौ कविता-संग्रह, पांच कहानी-संग्रह, छह उपन्यास प्रकाशित हुए। प्रमुख कविता संग्रह हैः लगभग जयहिंद, सब कुछ होना बचा रहेगा। उपन्यास : नौकर की कमीज, दीवार मे एक खिड़की रहती थी। कहानी संग्रह : पेड़ पर कमरा।

श्रद्धा सुमन

विनोद कुमार शुक्ल जी का जाना बेहद दुखद है। अभी उनको ज्ञानपीठ मिला था और हम सब बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि उन्हें पुरस्कार लेते हुए देखेंगे। उनकी 'नौकर की कमीज' उपन्यास मुझे बहुत पसंद है। इस उपन्यास ने समाज की सारी परतें खोलकर रख दी थीं।
– मृदुला गर्ग, प्रसिद्ध साहित्यकार

विनोद जी के लेखन में निम्न मध्य वर्ग के पारिवारिक जीवन के संघर्ष का बड़ा महीन चित्रण है। उनके संपूर्ण साहित्य में जीवन की विडंबनाओं की पकड़ है। उन्होंने आदिवासियों पर भी लेखन किया है। उनका साहित्य जीवन का मार्मिक आख्यान प्रस्तुत करता है। हिंदी साहित्य के लिए यह अपूरणीय क्षति है।
-डॉ. अनामिका, प्रसिद्ध साहित्यकार

सिंधु बेसिन में नदियों की मौजूदा स्थिति की समीक्षा

मंथन

यमुना जल प्रदूषण को लेकर भी रणनीति पर विचार

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। केंद्र सरकार ने सिंधु जल समझौते के स्थगित होने के बाद सिंधु बेसिन की नदियों की मौजूदा स्थिति की समीक्षा की है। इसके साथ ही दिल्ली में यमुना नदी के जल प्रदूषण को समाप्त करने की सरकार की घोषणा को समय पर पूरा करने के लिए भावी रणनीति पर भी विचार किया गया है।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में हुई इन बैठकों में जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल और आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर भी शामिल रहे। इस साल 22 अप्रैल को हुए पहलगाम आतंकी हमले के एक दिन बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई दंडात्मक कदम उठाए थे, जिनमें 1960 की सिंधु जल संधि को स्थगित करना भी शामिल था। विश्व बैंक की मध्यस्थता में हुई यह संधि 1960 से भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के जल के बंटवारे और उपयोग को नियंत्रित करती रही है। बैठक में सिंधु जल संधि के स्थगन के बाद जल के अधिकतम उपयोग की रणनीति और प्रस्तावित परियोजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही अब तक उठाए गए कदमों की प्रगति की समीक्षा भी की गई। इनमें सिंधु बेसिन की नदियों के पानी को भारतीय क्षेत्रों की ओर मोड़ने से जुड़ी दीर्घकालिक परियोजनाएं भी शामिल हैं।

सूत्रों के अनुसार, बैठक में दिल्ली में यमुना के प्रदूषण को समाप्त करने के मुद्दे पर भी चर्चा हुई। भाजपा ने दिल्ली में सत्ता में आने के बाद पांच साल में यमुना को प्रदूषण मुक्त करने का वादा किया है।

दिशा पाटनी मामले में चार शूटरों के खिलाफ चार्जशीट

उत्तर प्रदेश

गोल्डी बराड़ गिरोह के हैं चारों, मारे गए शूटरों का भी उल्लेख

बरेली, मुख्य संवाददाता। अभिनेत्री दिशा पाटनी के घर फायरिंग कर दहशत फैलाने के मामले में गोल्डी बराड़-रोहित गोदारा गैंग के दो नाबालिग समेत चार शूटर्स के खिलाफ कोतवाली पुलिस ने चार्जशीट दाखिल कर दी है। इस चार्जशीट में पुलिस ने नोएडा में मुठभेड़ में मारे गए दो शूटर्स का भी उल्लेख किया है।

बता दें कि 11 सितंबर की सुबह 4:15 और 12 सितंबर की तड़के 3:33 बजे लगातार दो दिन दो बाइकों पर आए दो-दो बदमाशों ने बरेली के सिविल लाइंस में स्थित फिल्म अभिनेत्री दिशा पाटनी के घर ताबड़तोड़ नौ राउंड फायरिंग कर दहशत फैलाई गई थी। इस घर में अभिनेत्री के पिता रिटायर्ड डिप्टी एसपी जगदीश पाटनी, उनकी बहन रिटायर्ड मेजर खुशबू पाटनी और उनकी मां रहती हैं। फायरिंग के बाद फेसबुक पोस्ट डाकर गोल्डी बराड़ गैंग के गैंगस्टर रोहित गोदारा ने इस घटना की जिम्मेदारी ली थी। 17 सितंबर को गैंग के दो शूटर, रोहतक के कहनी निवासी रविंद्र और सोनीपत के गोहना रोड निवासी अरुण को मुठभेड़ में मार गिराया था।

इस वजह से की थी फायरिंग : बताया जा रहा है कि अभिनेत्री की बहन रिटायर्ड मेजर खुशबू पाटनी ने प्रेमानंद महाराज और कथावाचक अनिरुद्धाचार्य पर टिप्पणी की थी। बाद में उन्होंने माफी भी मांग ली थी। रोहित गोदारा ने इस टिप्पणी का बदला लेने के लिए ही फायरिंग कराने की बात कही थी।

Hindustan Page No-7

नई परिभाषा से पैदा होतीं आशंकाएं

अरावली पहाड़ियों की परिभाषा को लेकर खड़ा हुआ विवाद सिर्फ तकनीकी या कानूनी नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय भविष्य से जुड़ा गंभीर सवाल है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री द्वारा यह कहे जाने के बावजूद कि अरावली क्षेत्र पूरी तरह सुरक्षित है और उसके महज 0.19 प्रतिशत हिस्से में ही खनन होगा, अरावली की नई परिभाषा ने नई आशंकाओं को जन्म दिया है। इसमें 100 मीटर से अधिक ऊंची पहाड़ियों को ही अरावली मानने की बात कही गई है। दावा किया जा रहा है कि अब 99 मीटर तक ऊंची पहाड़ियां संरक्षण के दायरे से बाहर हो जाएंगी, जिससे खनन के लिए इसके एक बड़े भूभाग के खुलने की आशंका बढ़ गई है।

यही कारण है कि विशेषज्ञों और पर्यावरणविदों को मंत्री के आश्वासन के बावजूद संतोष नहीं हो रहा है। सवाल है कि क्या अब नई परिभाषा के लागू होने के बाद भी खनन वास्तव में केवल 0.19 प्रतिशत क्षेत्र तक सीमित रह सकेगा या फिर वैधानिक छूट के नाम पर अरावली का एक बड़ा हिस्सा खत्म कर दिया जाएगा। अनुभव बताते हैं, जहां भी वैध खनन की अनुमति मिलती है, वहीं अवैध खनन की गतिविधियां तेजी से पनपती हैं और अरावली क्षेत्र में बार-बार अवैध खनन की खबरें इसका प्रमाण हैं। बेशक यह स्पष्ट किया गया है कि एनसीआर में खनन की अनुमति नहीं है और इसको लेकर भ्रम फैलाया जा रहा है, लेकिन एनसीआर से बाहर के इलाकों में खनन की सीमा, शर्तें और निगरानी व्यवस्था को लेकर जो अस्पष्टता है, वही असल चिंता का विषय है। अरावली पर्वतमाला केवल चट्टानों का समूह नहीं, बल्कि दुनिया की सबसे प्राचीन पर्वत शृंखलाओं में से एक है, जो थार मरुस्थल की रेत को मैदानी इलाकों में फैलने से रोकने वाली प्राकृतिक दीवार की तरह काम करती है और भूजल पुनर्भरण, जैव विविधता संरक्षण और स्थानीय जलवायु संतुलन में अहम भूमिका निभाती है।

हालिया अध्ययनों से यह भी सामने आया है कि हरियाणा और राजस्थान के कई हिस्सों के अरावली क्षेत्र में सड़क-निर्माण, अतिक्रमण, कचरा डंपिंग और खनन के कारण पहाड़ियां क्षत-विक्षत हो रही हैं। ऐसे में, अरावली की परिभाषा में उसके संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को आधार बनाया जाना चाहिए, खनन पर वास्तविक नियंत्रण सुनिश्चित किया जाना चाहिए व अवैध गतिविधियों पर कार्रवाई होनी चाहिए, क्योंकि यदि अरावली कमजोर पड़ी, तो उसका असर पहाड़ियों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उत्तर भारत की जलवायु, जल-सुरक्षा व जीवन गुणवत्ता पर भी विनाशकारी रूप में पड़ेगा।

विभूति बुपक्या, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम
अरावली की पहाड़ियां

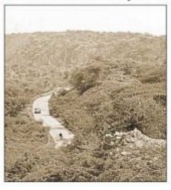

अरावली का विवाद पूरी तरह निरर्थक

इन दिनों अरावली पहाड़ियों को लेकर खूब बहस चल रही है। इसे एक विवाद के रूप में पेश किया जा रहा है, जबकि असलियत में यह कोई विवाद है ही नहीं। यह सिर्फ दुष्प्रचार है और हर बार की तरह इस बार भी इसे फैलाने वाले वही लोग हैं, जो पहले से यह काम करते आए हैं। वास्तव में, अभी तक अरावली पहाड़ियों की कोई तय, लिखित या वैज्ञानिक परिभाषा नहीं थी। इसे राजस्थान से दिल्ली तक फैले एक प्राचीन पर्वतमाला के रूप में स्वीकार किया गया था, जिसकी ऊंचाई की कोई सीमा तय नहीं थी। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा कि अरावली पहाड़ियों की एक समान, स्पष्ट और वैज्ञानिक परिभाषा बनाइए। चूंकि अलग-अलग राज्य अलग-अलग परिभाषा तय कर रहे हैं, और यह कहीं अरावली मानी जा रही है, तो कहीं नहीं, जिसका फायदा खनन माफिया उठा रहे हैं और अवैध निर्माण भी हो रहा है, इसलिए एक तय परिभाषा की मांग गंभीरता से उठी।

नतीजतन, केंद्र सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने एक कमिटी बनाई, जिसने अरावली को मापने के लिए 100 मीटर या अधिक ऊंचाई को मानदंड बनाने का प्रस्ताव सुप्रीम कोर्ट को दिया। चूंकि यह एक अंतरराष्ट्रीय मानक है भू-आकृतियों को मापने का, इसलिए 100 मीटर ऊंचाई वाली इस परिभाषा को अदालत ने मान लिया। अदालत की नजर में यह वैज्ञानिक कसौटी पर खरी है, और जब तक वैज्ञानिक तरीके से मैपिंग व टिकाऊ प्लानिंग नहीं हो जाती, तब तक के लिए इसे स्वीकार कर लिया गया। विवाद की वजह यही 100 मीटर है, जो फिलहाल सुर्खियों में है। हालांकि, इसे जरूरतों के हिसाब से बदला भी जा सकता है। ऐसा नहीं है कि परिभाषा जब तय नहीं हुई थी, तब अरावली में कोई खनन नहीं हो रहा था या वहां कोई निर्माण-कार्य नहीं चल रहा था।

100 मीटर की ऊंचाई तय होने के बाद भी वन संरक्षण अधिनियम, पर्यावरण संरक्षण के कानून और राज्यों के कानून इन पर पूरी तरह लागू होंगे। लिहाजा, यह कहना कि इससे खनन और निर्माण कार्य बढ़ जाएंगे, बेकार की बातें हैं। इसका कोई मतलब नहीं। फिर, केंद्र सरकार ने न तो खनन का कोई नया पट्टा दिया है और न ही किसी पुराने का नवीनीकरण किया है। सिर्फ एक परिभाषा दी है, जो अदालत ने स्वीकार कर ली है। इसको लेकर बहुत हाय-तौबा मचाने की जरूरत नहीं है। फिर ऐसा भी नहीं मानना चाहिए कि अदालत, राष्ट्रीय हरित अधिकरण और सरकार सब गलत हों, लेकिन दुष्प्रचार करने वालों के लिए हमेशा की तरह सब गलत हैं, सिर्फ वही सही हैं।

मनीष केसरी, टिप्पणीकार

Hindustan Page No-10

वेतन, आव्रजन नीति और वित्तीय दबाव के कारण | चिंता | विकल्प की तलाश में आस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड जा रहे

ब्रिटेन छोड़ रहे हैं भारतीय चिकित्सक

नई दिल्ली, 23 दिसंबर (भाषा)।

साझा इतिहास, भोजन और वास्तुकला के अलावा भारत और ब्रिटेन को जोड़ने वाली एक मजबूत कड़ी स्वास्थ्य पेशेवर भी हैं लेकिन जो देश अपने वतन से दूर घर बसाने के लिए कभी सोच-समझकर चुना गया ठिकाना माना जाता था, वह अब भारतीयों के लिए, खासकर ब्रिटेन में हालिया नीतिगत बदलावों के असर से जूझ रहे चिकित्सा पेशेवरों के लिए पहले जैसा नहीं रहा।

ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) में काम कर रहे भारतीय मूल के वरिष्ठ चिकित्सकों ने समाचार एजंसी से कहा कि कई भारतीय स्वास्थ्य पेशेवर ब्रिटेन छोड़ने का विकल्प चुन रहे हैं और वे ऐसा चिकित्सकीय काम से असंतोष के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वित्तीय और आव्रजन संबंधी दबावों ने ब्रिटेन को दीर्घकालिक रूप से कम व्यवहार्य विकल्प बना दिया है। इस रपट के लिए साक्षात्कार देने वाले चिकित्सकों ने अपनी व्यक्तिगत हैसियत से बात की और वे राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा या अपने नियोक्ता के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान प्रस्तुत भारत सरकार के आंकड़ों से पता चला कि भारतीय नागरिकों को जारी किए गए स्वास्थ्य और देखभाल कर्मी वीजा में लगभग 67 फीसद की गिरावट आई जबकि नर्सिंग पेशेवरों के बीच यह गिरावट लगभग 79 फीसद रही। करीब 20 साल अनुभव वाले एनएचएस के वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ रजय नारायण ने समाचार एजंसी को बताया कि कई भारतीय स्वास्थ्य पेशेवर ब्रिटेन छोड़ने का विकल्प इसलिए चुन रहे हैं क्योंकि आस्ट्रेलिया, कनाडा और पश्चिम एशिया के कुछ अन्य देश कहीं अधिक वेतन और स्पष्ट दीर्घकालिक अवसर प्रदान कर रहे हैं। एनएचएस के साथ दो दशकों से काम कर रहे पेशेवर के रूप में डॉ. नारायण ने कहा कि कभी ब्रिटेन को वैश्विक स्तर पर अग्रणी स्वास्थ्य प्रणालियों में से एक माना जाता था लेकिन समय के साथ इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि अब कई लोग ब्रिटेन में दीर्घकालिक करिअर की संभावनाएं नहीं देखते और कई ब्रिटिश-भारतीय पेशेवर बेहतर अवसरों की तलाश में भारत भी लौट रहे हैं। दक्षिण-पश्चिम ब्रिटेन में राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा से जुड़े रेडियोलाजिस्ट संजय गांधी ने कहा कि भारतीय मूल के स्वास्थ्य पेशेवरों के ब्रिटेन छोड़ने के पीछे मुख्य कारणों में से एक यह है कि राजनीतिक संबद्धता से इतर सभी सरकारों ने शुद्ध आव्रजन कम करने की प्रतिबद्धता जताई है। उन्होंने कहा कि हालांकि अवैध आव्रजन को नियंत्रित करना कठिन साबित हुआ है।

ब्रिटेन सरकार के 2024 के आंकड़ों के अनुसार, एशियाई या एशियाई ब्रिटिश कर्मचारी राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा के कार्यबल का 13 फीसद हैं और पूर्णकालिक कार्यबल का 16 फीसद तथा अंशकालिक कार्यबल का आठ फीसद हिस्सा हैं। वहां के राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा से जुड़े संजय गांधी ने कहा कि पिछले तीन वर्षों में ही उनके जानकार कम से कम आधा दर्जन चिकित्सक आस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड चले गए हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या कम वेतन और जीवनयापन की लागत मुख्य समस्याएं हैं, तो उन्होंने कहा कि दोनों ही चिंता का विषय हैं और उच्च कराधान स्थिति को और खराब बनाता है।

Jansatta Page No-14

श्रीहरिकोटा में 'ब्लूबर्ड ब्लाक-2' मिशन के लिए उल्टी गिनती शुरू

अमेरिकी उपग्रह को आज छोड़ेगा इसरो

श्रीहरिकोटा, 23 दिसंबर (भाषा)।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कहा कि अमेरिका के एक नए पीढ़ी के संचार उपग्रह को ले जाने वाले एलवीएम-एम6 राकेट के प्रक्षेपण के लिए 24 घंटे की उल्टी गिनती मंगलवार को यहां शुरू हो गई। इसरो एक समर्पित वाणिज्यिक मिशन के तहत बुधवार को सुबह 8:54 बजे इस स्पेसपोर्ट के दूसरे प्रक्षेपण पैड से अपने प्रक्षेपण यान एलवीएम3-एम6 के जरिए 'ब्लूबर्ड ब्लाक-2' का प्रक्षेपण करेगा।

बंगलुरु स्थित अंतरिक्ष एजंसी ने बताया कि 6,100 किलोग्राम वजनी यह संचार उपग्रह एलवीएम3 के प्रक्षेपण इतिहास में पृथ्वी की निम्न कक्षा (एलईओ) में स्थापित किया जाने वाला अब तक सबसे भारी पेलोड

होगा। इससे पहले सबसे भारी पेलोड एलवीएम3-एम5 संचार उपग्रह-03 था, जिसका वजन करीब 4,400 किलोग्राम था और जिसे इसरो ने दो नवंबर को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया था। बुधवार का यह मिशन 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' (एनएसआईएल) और अमेरिका स्थित एएसटी स्पेसमोबाइल के बीच हुए वाणिज्यिक समझौते के तहत संचालित किया जा रहा है। एनएसआईएल, इसरो की वाणिज्यिक इकाई है। इसरो ने मंगलवार को एक अद्यतन जानकारी में कहा कि एलएमवी3-एम6 के माध्यम से ब्लूबर्ड ब्लाक-2 उपग्रह कल, 24 दिसंबर 2025 को भारतीय समयानुसार सुबह 8:54 बजे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपित किया जाएगा। उल्टी गिनती शुरू हो गई है। प्रक्षेपण से इसरो प्रमुख वी. नारायणन ने 22 दिसंबर को तिरुमला में श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पूजा अर्चना की थी। यह ऐतिहासिक मिशन अगली पीढ़ी का ऐसा संचार उपग्रह स्थापित करेगा, जिसे दुनिया भर में स्मार्टफोन को सीधे उच्च गति वाली सेल्युलर ब्राडबैंड सेवा देने के लिए डिजाइन किया गया है।

Jansatta Page No-14

विदेश मंत्री जयशंकर ने किया एलान

चक्रवात प्रभावित श्रीलंका को 45 करोड़ डालर मदद देगा भारत

कोलंबो, 23 दिसंबर (भाषा)।

भारत ने चक्रवात 'डिटवा' से प्रभावित श्रीलंका के लिए 45 करोड़ अमेरिकी डालर के पुनर्निर्माण पैकेज की मंगलवार को घोषणा की। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने द्वीपीय देश के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की और चक्रवात के बाद कोलंबो के पुनर्निर्माण के लिए भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विशेष दूत के रूप में दो दिवसीय दौरे पर यहां पहुंचे जयशंकर ने कहा कि जब श्रीलंका संकट का सामना कर रहा हो, ऐसे समय में भारत का आगे आना स्वाभाविक था।

मंत्री ने राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके से मुलाकात की और प्रधानमंत्री मोदी की हार्दिक शुभकामनाएं और चक्रवात 'डिटवा' के बाद एकजुटता का संदेश दिया। श्रीलंका के विदेश मंत्री विजिथा हेरात के साथ संवाददाताओं को संबोधित करते हुए जयशंकर ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का वह पत्र जो मैंने सौंपा है, हमारी सबसे पहले मदद पहुंचाने वाले की भूमिका को मजबूत करता है और श्रीलंका के लिए 45 करोड़ अमेरिकी डालर के पुनर्निर्माण पैकेज के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करता है।

जयशंकर ने कहा कि उन्होंने राष्ट्रपति के साथ चक्रवात 'डिटवा' से हुए नुकसान पर विस्तृत चर्चा की और उनकी बातचीत इस बात पर केंद्रित थी कि भारत की सहायता राशि कितनी शीघ्रता से पहुंचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि हमने 45 करोड़ अमेरिकी डालर की सहायता की पेशकश की है जिसमें 35 करोड़ अमेरिकी डालर का रियायती ऋण और 10 करोड़ अमेरिकी डालर की अनुदान सहायता शामिल होगी।

विदेश मंत्री के मुताबिक, सहायता पैकेज में पुनर्वास और सड़क, रेलवे और पुल संपर्क की बहाली, पूरी तरह से नष्ट और आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त घरों के निर्माण में मदद, स्वास्थ्य और शिक्षा प्रणाली, कृषि क्षेत्र में मदद तथा बेहतर आपदा प्रतिक्रिया और तैयारियों की दिशा में काम करना शामिल है।

उन्होंने कहा कि हम इस बात से अवगत हैं कि श्रीलंका के लोगों पर चक्रवात 'डिटवा' के प्रभाव को कम करने के लिए जल्द से जल्द काम किया जाना चाहिए। हम जल्द से जल्द सहायता पहुंचाने के लिए एक प्रभावी समन्वय तंत्र पर चर्चा कर रहे हैं। राष्ट्रपति दिसानायके की उपस्थिति में जयशंकर और श्रीलंकाई विदेश मंत्री ने संयुक्त रूप से उत्तरी प्रांत के किलिनोच्ची जिले में 120 फुट लंबे दोहरी लेन वाले बेली ब्रिज का उद्घाटन किया गया। यह जिला चक्रवात 'डिटवा' से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। एक सौ दस टन वजनी इस पुल को भारत से हवाई मार्ग से लाया गया और 'आपरेशन सागर बंधु' के तहत स्थापित किया गया।

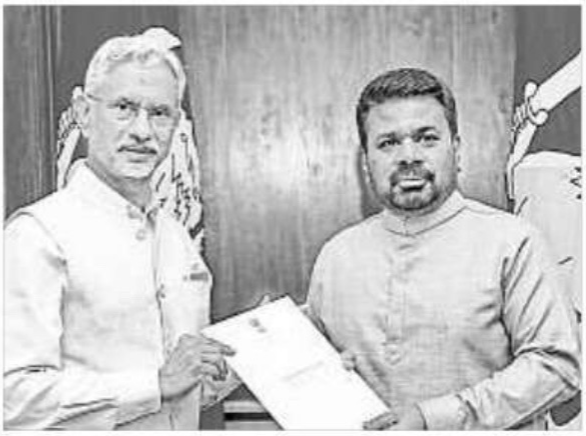

श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके साथ विदेश मंत्री जयशंकर।

विदेश मंत्री जयशंकर ने पोस्ट किया कि राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके की उपस्थिति में उत्तरी प्रांत के किलिनोच्ची जिले में 120 फुट लंबे दोहरी लेन वाले बेली ब्रिज का उद्घाटन किया गया। यह जिला चक्रवात 'डिटवा' से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। 110 टन वजनी इस पुल को भारत से हवाई मार्ग से लाया गया और 'आपरेशन सागर बंधु' के तहत स्थापित किया गया।

उम्मीद

वैश्विक परामर्श फर्म ईवाई की रपट में केंद्रीय बजट को लेकर अनुमान

घरेलू मांग को बढ़ाकर वृद्धि को मजबूती देने का संकेत

नई दिल्ली, 23 दिसंबर (भाषा)।

आगामी केंद्रीय बजट में लक्षित राजकोषीय समर्थन के जरिये मजबूत घरेलू मांग को सहारा देकर आर्थिक वृद्धि को मजबूती दी जा सकती है, जो भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) की विकास-उन्मुख मौद्रिक नीति के अनुरूप होगा। मंगलवार को जारी एक रपट में यह संभावना जताई गई।

वैश्विक परामर्श फर्म ईवाई की रपट कहती है कि चालू वित्त वर्ष के दौरान आयकर और जीएसटी दरों में कटौती होने से राजस्व में कुछ नुकसान हो सकता है। ईवाई ने कहा कि हाल में राजस्व बढ़ाने से जुड़े दो उपाय भी घोषित किए गए हैं, जिनमें तंबाकू उत्पादों पर उत्पाद शुल्क और राष्ट्रीय सुरक्षा एवं जन स्वास्थ्य उपकर शामिल हैं। संसद ने हाल ही में तंबाकू उत्पादों पर उत्पाद शुल्क और पान मसाला पर उपकर लगाने से संबंधित दो विधेयकों को पारित किया है। ये कानून अधिसूचित तिथि से लागू होंगे। ईवाई इंडिया के मुख्य नीति सलाहकार डीके श्रीवास्तव ने कहा, 'आगे चलकर भारत को वृद्धि के समर्थन के लिए अपनी जुझारू घरेलू मांग पर निर्भर रहना पड़ सकता है।

आरबीआइ की विकास-उन्मुख नीति के साथ वित्त वर्ष 2026-27 के आम बजट से भी पूरक वृद्धि प्रोत्साहन की उम्मीद की जा सकती है।' वित्त वर्ष 2026-27 के लिए केंद्रीय बजट संसद में एक फरवरी, 2026 को पेश किया जाना प्रस्तावित है।

'ईवाई इकानमी वाच' रपट के मुताबिक, वैश्विक स्तर पर प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि में शुद्ध निर्यात का योगदान नकारात्मक बने रहने की आशंका है। चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में शुद्ध निर्यात का योगदान (-) 2.1 फीसद अंक रहा, जो वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही में (-)1.4 फीसद अंक था।

व्यापार से जुड़ी अनिश्चितताएं कम होने तक यह प्रभाव बना रह सकता है। श्रीवास्तव ने कहा कि भारत के मध्यम अवधि में मजबूत वृद्धि बनाए रखने और औसतन 6.5 फीसद की वृद्धि दर रहने का अनुमान है।

उन्होंने कहा कि घरेलू निजी निवेश में तेजी और वैश्विक आपूर्ति शृंखला से जुड़ी बाधाओं के कम होने से वृद्धि को और समर्थन मिल सकता है। भारत ने चालू वित्त वर्ष की पहली दो तिमाहियों में क्रमशः 7.8 फीसद एवं 8.2 फीसद की वृद्धि दर्ज की है।

आरबीआइ ने चालू वित्त वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर 7.3 फीसद रहने का अनुमान जताया है जो 2024-25 में 6.5 फीसद थी।

ईवाई की रपट कहती है कि चालू वित्त वर्ष के दौरान आयकर और जीएसटी दरों में कटौती होने से राजस्व में कुछ नुकसान हो सकता है। हालांकि, गैर-कर राजस्व से अतिरिक्त प्राप्तियां और राजस्व व्यय में संभावित कटौती से सरकार के लिए राजकोषीय घाटे एवं पूंजीगत व्यय के लक्ष्यों को पूरा करना संभव हो सकता है।

epaper.jansatta.com
Jansatta Page No-12

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की तैयारी पूरी, सीपीआइ की गणना में ई-कामर्स होगा शामिल

फरवरी से बदलेगा महंगाई व जीडीपी मापने का तरीका

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 23 दिसंबर।

केंद्र सरकार देश की अर्थव्यवस्था को मापने के पैमानों में बड़ा बदलाव करने जा रही है। फरवरी 2026 से खुदरा महंगाई (सीपीआइ) और देश की विकास दर यानी जीडीपी के आंकड़े नई सीरीज (नए बेस ईअर) के साथ जारी किए जाएंगे। वहीं मई 2026 से औद्योगिक उत्पादन यानी आइआइपी के आंकड़े भी नई सीरीज में जारी होंगे। जीडीपी और आइआइपी के लिए नया आधार वर्ष 2022-23 होगा। वहीं खुदरा महंगाई के लिए 'बेस ईअर' 2024 होगा। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने इसकी तैयारी पूरी कर ली है।

सरकार ने उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआइ) की विश्वसनीयता, सटीकता और गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार लाने के उद्देश्य से खुदरा मुद्रास्फीति की गणना में आनलाइन स्रोतों के साथ-साथ ई-कामर्स मंच को भी शामिल करने का प्रस्ताव किया है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआइ) सीपीआइ, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की गणना के लिए आधार वर्षों को संशोधित करने की प्रक्रिया में है।

सीपीआइ (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक-आधारित मुद्रास्फीति) की नई शृंखला के आंकड़े (2024 =100) को आधार वर्ष मानते हुए 12 फरवरी, 2026 को जारी किए जाने की संभावना है। वित्त वर्ष 2022-23 को आधार वर्ष मानकर राष्ट्रीय लेखा संबंधी आंकड़े 27 फरवरी, 2026 को जारी किए जाएंगे, जबकि 2022-23 को आधार वर्ष मानते हुए आइआइपी की नई शृंखला के आंकड़े 28 मई को जारी होंगे। मंगलवार को मंत्रालय ने सीपीआइ, जीडीपी और आइआइपी के आधार वर्ष संशोधन पर परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया।

मंत्रालय ने उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में नए आंकड़ा स्रोतों को शामिल करने के संबंध में कहा कि वर्तमान शृंखला में भौतिक दुकानों से एकत्र किए जा रहे आंकड़ों के अतिरिक्त, 25 लाख से अधिक आबादी वाले 12 चयनित शहरों में ई-कामर्स मंच से भी कीमत आंकड़े प्राप्त की जाएंगी।

रेल किराए के लिए रेलवे, ईंधन की कीमतों के लिए पेट्रोलियम मंत्रालय और डाक शुल्क के लिए डाक विभाग के साथ समन्वय में प्रशासनिक आंकड़े प्राप्त करने के भी प्रयास किए जाएंगे। एमओएसपीआइ ने कहा कि हवाई किराये, दूरसंचार सेवाओं और ओटीटी (ओवर द टाप) मंच के लिए, वेब-आधारित तरीकों का उपयोग करके आनलाइन स्रोतों से मूल्य आंकड़े संकलित करने का प्रस्ताव है। मंत्रालय के अनुसार, 'इन वैकल्पिक और डिजिटल डेटा स्रोतों को अपनाने से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की प्रतिनिधित्व क्षमता, विश्वसनीयता, सटीकता और समग्र गुणवत्ता में काफी सुधार होने की उम्मीद है।'

मंत्रालय शहरी और ग्रामीण बाजारों में भी दायरा बढ़ा रहा है। साथ ही बदलते उपभोग प्रतिरूप को बेहतर ढंग से समझने के लिए ई-कामर्स मूल्य आंकड़े और अन्य डिजिटल स्रोतों को भी शामिल कर रहा है।

'आंकड़ों के अनुमान को खराब मानने की मानसिकता में बदलाव जरूरी'

मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने मंगलवार को कहा कि आंकड़ों का अनुमान लगाने के सभी तौर-तरीकों की कुछ सीमाएं होती हैं, लेकिन भारत की जीडीपी का अनुमान लगाने की पद्धति को खराब मानने की मानसिकता को बदलने की जरूरत है। आर्थिक वृद्धि के आंकड़ों को लेकर कुछ तबकों में जताई गई चिंताओं के बीच नागेश्वरन ने कहा कि चिंताएं तभी उठाई जाती हैं जब जीडीपी के आंकड़े उम्मीद से कहीं अधिक होते हैं, जबकि आंकड़ों के निराशाजनक होने पर तौर-तरीकों पर कोई सवाल नहीं उठाया जाता। मुख्य आर्थिक सलाहकार ने कहा, 'ऐसा नहीं है कि भारत के जीडीपी के आंकड़े वास्तविक स्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्य से ये सभी जानबूझकर संदेह पैदा करने के लिए अनुतरित छोड़ दिए जाते हैं।

Jansatta Page No-12

एआइ एजेंट प्रयोगशाला में इंसानों की तरह करेगा प्रयोग

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- पहले माइक्रोस्कोप सेटिंग्स ठीक करने में लगता था पूरा दिन, एआइ एजेंट करेगा सिर्फ 7-10 मिनट में
- इससे कई गुना बढ़ गई है प्रयोग की गति, यह प्रयोगशाला में उपकरण चलाने और नतीजे देखने में भी सक्षम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) दिल्ली के शोधकर्ताओं ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए ऐसा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) एजेंट विकसित किया है, जो अब प्रयोगशाला में इंसानों की तरह वास्तविक वैज्ञानिक प्रयोग कर सकता है। आइला (आर्टिफिशियली इंटेलिजेंट लैब असिस्टेंट) नाम से तैयार इस एआइ सिस्टम ने एटामिक फोर्स माइक्रोस्कोप (एएफएम) चलाना सीख लिया है।

यह एक ऐसा जटिल और संवेदनशील उपकरण है, जो बहुत ही सूक्ष्म स्तर पर पदार्थों का अध्ययन करता है। पहले माइक्रोस्कोप की सेटिंग्स को ठीक करने में पूरा दिन लगता था, लेकिन आइला इसे सिर्फ सात से 10 मिनट में कर देता है, जिससे शोध तेज हो गया है। आइला अब प्रयोग कर सकता है, उपकरण चला सकता है और नतीजे भी देख सकता है। आइआइटी दिल्ली के पीएचडी छात्र इंद्रजीत मंडल ने बताया कि आइला ने उनके शोध कार्य की गति कई गुना बढ़ा दी है। पहले एआइ सिर्फ सवालों के जवाब देने या डाटा देखने तक सीमित था, लेकिन अब ये वास्तविक प्रयोग भी कर सकता है। इस परियोजना में डेनमार्क और जर्मनी के शोधकर्ताओं ने भी सहयोग किया है।

आइआइटी दिल्ली के शोधकर्ताओं द्वारा तैयार आइला (आर्टिफिशियली इंटेलिजेंट लैब असिस्टेंट)। सौजन्य: आइआइटी

प्रो. अनूप कृष्णन और प्रो. नित्या नंद गोस्वामी ने बताया कि यह सिर्फ तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि प्रयोगात्मक विज्ञान की दिशा बदलने वाला कदम है। पहले एआइ केवल डाटा विश्लेषण और लेखन में मदद करता था, अब यह खुद प्रयोग डिजाइन कर सकता है, वास्तविक उपकरण चला सकता है, डाटा रिकार्ड कर सकता है और उसका विश्लेषण भी कर सकता है।

शोध टीम ने यह भी स्वीकार किया कि एआइ में चुनौती और जोखिम दोनों मौजूद हैं। कभी-कभी एआइ ने निर्देशों से विपरीत होकर काम किया। इसलिए भविष्य के लिए मजबूत सुरक्षा तंत्र की आवश्यकता है, जिससे किसी तरह की दुर्घटना या उपकरण नुकसान से बचा जा सके। आइआइटी की ये उपलब्धि भारत के एआइ फार साइंस मिशन के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। यह तकनीक देशभर के विश्वविद्यालयों और संस्थानों में वैज्ञानिक शोध को नई गति दे सकती है। ऊर्जा और एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में शोध की गति कई गुना बढ़ने की उम्मीद है।

Dainik Jagaran Page No-14

अमेरिकी नौसेना ने 31 साल बाद की नए युद्धपोत बनाने की घोषणा

- 'यूएसएस डिफायंट' के तहत कुल 20-25 युद्धपोतों का बेड़ा बनेगा
- ट्रंप के 'गोल्डन फ्लीट' का निर्माण 2030 के प्रारंभ में ही शुरू होगा

वाशिंगटन, एपी : अमेरिकी नौसेना 31 सालों के बाद पहली बार नए युद्धपोत बनाने की घोषणा कर रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने नौसेना के लिए बड़े युद्धपोतों के निर्माण की साहसिक योजना का एलान करते हुए इसे एक बड़े गोल्डन फ्लीट की 'बैटलशिप' करार दिया है। ट्रंप के अनुसार, इस जहाज का नाम 'यूएसएस डिफायंट' होगा, जो द्वितीय विश्व युद्ध के युग के आयोवा-क्लास बैटलशिप से लंबा व बड़ा होगा और इसमें हाइपरसोनिक व न्यूक्लियर क्रूज मिसाइलें, रेल गन व लेजर जैसे अत्याधुनिक हथियार होंगे।

ट्रंप ने फ्लोरिडा के अपने मार-ए-लागो रिजार्ट में कहा, 'अमेरिकी नौसेना के नए और बड़े युद्धपोत सबसे तेज, सबसे बड़े और अब तक के किसी भी युद्धपोत से सौ गुना अधिक शक्तिशाली होंगे।" वह इस नए युद्धपोत के डिजाइन में भी सीधे भूमिका निभाएंगे। ट्रंप ने नौसेना में युद्धपोतों की योजनाओं में देरी और बढ़ती लागत के चलते इसकी रीब्रांडिंग का मन बनाया। गोल्डन फ्लीट की शुरुआत दो युद्धपोतों से की जाएगी जो आगे चलकर 20-25 युद्धपोतों को बेड़ा बनाएगी। इसमें पहले चरण के युद्धपोतों को 'यूएसएस डिफायंट' कहा जाएगा। यह नई "गाइडेड मिसाइल बैटलशिप" आयोवा-क्लास बैटलशिप के समान आकार की होगी लेकिन इसका वजन मौजूदा युद्धपोतों से आधा (लगभग 35,000 टन) होगा और इसमें 650 से 850 नाविकों के बीच बहुत छोटे क्रू होंगे। इसके प्राथमिक हथियार भी मिसाइलें होंगी, न कि बड़े नौसैनिक तोप। एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि नए जहाज के लिए डिजाइन प्रयास अब चल रहे हैं और निर्माण की योजना 2030 के प्रारंभ में शुरू होगी। यह घोषणा एक महीने बाद आई है जब अमेरिकी नौसेना ने एक नए छोटे युद्धपोत के निर्माण की योजनाओं को रद कर दिया था।

****

मादुरो का सत्ता छोड़ना 'समझदारी' होगी

वाशिंगटन, एएनआइ : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को लेकर बड़ा बयान दिया है। ट्रंप ने कहा कि अगर मादुरो सत्ता छोड़ देते हैं, तो यह उनके लिए एक समझदारी भरा फैसला होगा। यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिका वेनेजुएला पर सैन्य और आर्थिक दबाव लगातार बढ़ा रहा है।

अमेरिका पर आरोप: वेनेजुएला से अपराधियों की घुसपैठ : अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने वेनेजुएला पर अमेरिका को नुकसान पहुंचाने के गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि वेनेजुएला से लाखों लोग अमेरिका की खुली सीमा से अंदर आए। उनमें अपराधी, जेल से छूटे लोग, मादक पदार्थों के तस्कर और मानसिक रूप से अस्थिर लोग भी शामिल थे। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ और देशों से भी लोग आए, लेकिन वेनेजुएला से आने वालों की संख्या सबसे ज्यादा थी। ट्रंप ने इसके लिए अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति को जिम्मेदार ठहराया और कहा कि उस वक्त देश एक मूर्ख राष्ट्रपति के हाथ में था, जिसने सबको यूं ही अंदर आने दिया। अब ऐसा नहीं है।

समुद्र में टकराव: अमेरिकी कार्रवाई पर वेनेजुएला नाराज

हाल ही में अमेरिका ने वेनेजुएला के पास समुद्र में दो तेल टैंकर जब्त किए। इसके अलावा, रविवार को अमेरिकी कोस्ट गार्ड ने एक जहाज का पीछा किया, जिसे डार्क फ्लीट से जुड़ा बताया गया। यह जहाज बेला 1 था, जो वेनेजुएला की ओर तेल लोड करने जा रहा था। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, यह जहाज ईरानी तेल से जुड़ा हुआ है और उस पर पहले से ही अमेरिकी प्रतिबंध लगे हैं। इसके खिलाफ जब्ती का कानूनी आदेश भी जारी हो चुका था।

Dainik Jagaran Page No-11

ट्रंप ने दोहराई कब्जे की बात, ग्रीनलैंड के पीएम हुए दुखी

कोपनहेगन, रायटर : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को फिर दोहराया कि उनके देश को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ग्रीनलैंड की जरूरत है। खनिज संपदा से भरपूर इस आर्कटिक द्वीप को अमेरिका में शामिल करने के लिए ही उन्होंने विशेष दूत की नियुक्ति की है। ट्रंप की इस घोषणा पर ग्रीनलैंड के पीएम जेन्स फ्रेडरिक नील्सन ने कहा, वह काफी दुखी व हताश महसूस कर रहे हैं। उन्होंने फेसबुक पर एक पोस्ट लिखकर अपनी पीड़ा व्यक्त की। ज्ञात हो, ट्रंप ने लुइसियाना के गवर्नर जेफ लैंड्री को रविवार को ग्रीनलैंड का विशेष दूत नियुक्त किया है। ट्रंप ने फ्लोरिडा में मीडिया से बातचीत में कहा, उन्हें ग्रीनलैंड की खनिज संपदा से मतलब नहीं है। हमें अपनी और यूरोप की सुरक्षा के लिए ग्रीनलैंड चाहिए। उस इलाके में हर तरफ रूस व चीन के पोत मौजूद मिलेंगे। हमें ग्रीनलैंड लेना ही होगा।

डेनमार्क के पीएम मेट्टे फ्रेडरिकसेन व ग्रीनलैंड के पीएम जेन्स फ्रेडरिक नील्सन ने संयुक्त बयान में ट्रंप के रुख की आलोचना की थी। उन्होंने कहा था कि ग्रीनलैंड यहां के निवासियों का है। अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देकर आप किसी देश को अलग-थलग नहीं कर सकते। दोनों नेताओं ने अमेरिका से क्षेत्रीय संप्रभुता का सम्मान करने की नसीहत दी थी। नील्सन ने एक फेसबुक पोस्ट में कहा था कि ट्रंप की घोषणा सुनने में बड़ी लग रही है, लेकिन इससे हमारे लिए कुछ नहीं बदलेगा। हम स्वयं अपना भविष्य तय करेंगे।

- ट्रंप ने कहा, अमेरिका और सहयोगियों की सुरक्षा के लिए ग्रीनलैंड लेना जरूरी
- दखनिजों से मतलब नहीं, रूस और चीन के बढ़ते दबदबे से अमेरिका को तनाव

प्रतीकात्मक

ग्रीनलैंड पर क्यों टिकी है ट्रंप की नजर

- रेयर अर्थ खनिजों की अधिकता, चीन ग्रीनलैंड में प्रभाव बढ़ा रहा है
- पूरी दुनिया के रेयर अर्थ तत्वों का 25% तक ग्रीनलैंड में होने का अनुमान
- चीनी कंस्ट्रक्शन कंपनियों की ग्रीनलैंड में दो एयरपोर्ट बनाने की कोशिश
- खनन में लगी दो आस्ट्रेलियाई कंपनियों में से एक में चीन की हिस्सेदारी
- ग्रीनलैंड स्वतंत्र राष्ट्र नहीं है बल्कि डेनमार्क का एक स्वायत क्षेत्र है
- 21 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल वाले ग्रीनलैंड की आबादी सिर्फ 57 हजार
- 1860 में अमेरिकी राष्ट्रपति जानसन ने ग्रीनलैंड खरीदने का विचार रखा था
- ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में 2019 में ग्रीनलैंड को खरीदने की बात कही थी
- मार्च 2025 में उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने ग्रीनलैंड में अमेरिकी सैन्य बेस का दौरा किया था।

Dainik Jagaran Page No-11

प्रख्यात खगोलशास्त्री जयंत नार्लीकर को मरणोपरांत विज्ञान रत्न पुरस्कार

नई दिल्ली, पीटीः राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को विख्यात खगोलशास्त्री जयंत नार्लीकर को ब्रह्मांड विज्ञान में योगदान के लिए मरणोपरांत विज्ञान रत्न से सम्मानित किया। यह पुरस्कार पुणे स्थित अंतर-विश्वविद्यालय खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी केंद्र के निदेशक आर. श्रीआनंद ने प्राप्त किया, जिसे नार्लीकर ने स्थापित किया था।

मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित समारोह में राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार भी वितरित किए। राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार के दूसरे संस्करण में चार श्रेणियों-विज्ञान रत्न, विज्ञान श्री, विज्ञान युवा व विज्ञान टीम में 24 पुरस्कार प्रदान किए गए। विख्यात कृषि विज्ञानी ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह को विज्ञान श्री से सम्मानित किया गया। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के भौतिकी समूह के निदेशक यूसुफ मो. शेख को परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में, जैव विज्ञानी के.थंगराज, रसायन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आइआइटी-मद्रास के प्रदीप थलप्पिल, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान के उपकुलपति अनिरुद्ध भालचंद्र पंडित, पर्यावरण विज्ञान में राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक एस.वेंकटमोहन को विज्ञान श्री पुरस्कार प्रदान किया गया। रामकृष्ण आदेश के संत व टाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च के प्रोफेसर महान महाराज को गणित व कंप्यूटर के क्षेत्र में, जयन एन. को अंतरिक्ष क्षेत्र में विज्ञान श्री पुरस्कार मिला। जगदीश गुप्ता कपुगंती (कृषि विज्ञान), सतेन्द्र कुमार मंगरौठिया (कृषि विज्ञान), देबर्का सेनगुप्ता (जैव विज्ञान), दीपागा आकाशे (जैव विज्ञान), दिव्येंदु दास (रसायन विज्ञान), वलियूर रहमान (पृथ्वी विज्ञान) समेत 14 को विज्ञान युवा पुरस्कार मिला। जम्मू-कश्मीर में 'लैवेंडर मिशन' की शुरुआत करने वाली वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) की एरोमा मिशन टीम ने विज्ञान टीम पुरस्कार जीता है।

- राष्ट्रपति ने 24 वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार से किया सम्मानित
- कृषि वैज्ञानिक ज्ञानेंद्र व भाभा परमाणु केंद्र के यूसुफ को विज्ञान श्री पुरस्कार

नई दिल्ली में मंगलवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से खगोल भौतिकीविद् जयंत नारालिकर का विज्ञान रत्न पुरस्कार (मरणोपरांत) प्राप्त करते आर. श्रीआनंद। पीटीआई

Dainik Jagaran Page No-3

अरावली पर्वतमाला

हमारी सदाबहार प्राकृतिक धरोहर

इंटरनेट मीडिया की गूंज और विपक्ष की बातों में अरावली की पहाड़ियां एक बनावटी हंगामे का शिकार बन गई हैं। 20 नवंबर, 2025 को सुप्रीम कोर्ट का निर्णय, जो इस पर्वत शृंखला के लिए एक समान परिभाषा अपनाता है, उसे जानबूझकर 'इको-विनाश' और इन प्राचीन पहाड़ियों के 90 प्रतिशत के लिए 'मौत का वारंट' जैसी कहानी में बदल दिया गया है। लेकिन अतिशयोक्ति हटा दें तो तथ्य कुछ और बताते हैं कि यह लूट नहीं, बल्कि संरक्षण है। ऐसे में हमें इस मामले के पीछे की सच्चाई को भी समझना चाहिए

पश्चिम-उत्तर भारत के पर्यावरण संरक्षण में अरावली पर्वतमाला का व्यापक योगदान है। फाइल

एंड एजुकेशन के जरिए हर जिले के लिए मैनेजमेंट प्लान फार सस्टेनेबल माइनिंग तैयार न कर ले। मौजूदा खदानों को भी सख्त सस्टेनेबल प्रैक्टिस फालो करनी होंगी, जैसे बाइल्डलाइफ प्लान और हर छह महीने आडिट। सुप्रीम कोर्ट का आदेश अरावली में माइनिंग शुरू करने का अनुमोदन नहीं है।

अब झूठ फैलाने वालों का ट्रैक रिकार्ड देखें। कांग्रेस का "सेव अरावली" अभियान विडंबना से भरा है। अशोक गहलोत के कार्यकालों में सुप्रीम कोर्ट के बैन के बावजूद अवैध खनन फलता-फूलता रहा। वर्ष 2018 की एक रिपोर्ट में राजस्थान में लगातार गतिविधियां उजागर हुईं, जहां माफिया पहाड़ियों को खोखला कर रहे थे। 2009 में कांग्रेस की केंद्र और राज्य सरकारों के समय सुप्रीम कोर्ट ने ब्लैंकेट माइनिंग बैन लगाया। अंदाजा लगाएं किसने इसका विरोध किया? गहलोत सरकार ने। साथ ही, एनफोर्समेंट बेहद खराब था। न्यायालय के रिकार्ड्स के मुताबिक दशकों में राजस्थान में 31 पहाड़ियां गायब हो गईं। गहलोत सरकार की परिभाषा शुरुआत तो थी, लेकिन बिना दांतों वाली- कोई एकसमान मैपिंग नहीं, कोई इनबायोलेट जोंस नहीं और ढीली मानिटरिंग से ओवर-एक्सप्लाइटेशन होता रहा। कांग्रेस पहाड़ियों को राजनीतिक हथियार बना रही है।

इसके उलट मोदी सरकार का रिकार्ड देखें। अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट, जो पीएम मोदी के नेतृत्व में लांच हुआ, रेंज के साथ जंगलों को बहाल कर रहा है, जिसमें गुजरात में सीड-बाल कैंपेन शामिल हैं। इस पहल के तहत सरकार अरावली रेंज में 20 से ज्यादा नए फारेस्ट रिजर्व एरिया बनाने का कमिटमेंट कर चुकी है, अतिरिक्त रिजर्व्ड और प्रोटेक्टेड जोंस बनाकर बायोडायवर्सिटी हाटस्पाट्स को मजबूत कर रही है। मोदी सरकार ने 'ग्रीन अरावली' मूवमेंट से एनफोर्समेंट को तेज किया है, जिसमें बड़े पैमाने पर प्लांटिंग ड्राइव और समाज का शामिल किया गया है, ताकि रेगिस्तान को बढ़ने से रोका जाए। इसके अलावा, ड्रोन सर्विलांस, डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स, एआइ से अवैध खनन रोकना और पुरानी साइट्स की रिक्लेमेशन से एनफोर्समेंट को दांत मिल रहे हैं। दिल्ली के जिलों में कोई खनन नहीं और 20 से ज्यादा रिजर्व/प्रोटेक्टेड एरिया पूरी तरह सुरक्षित हैं। पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव के अनुसार, मोदी सरकार आने के बाद संरक्षण बढ़ा है, कमजोर नहीं हुआ।

अरावली की तमाम समस्याएं जैसे अवैध खनन, शहरीकरण, ग्राउंडवाटर को ज्यादा निकासी इस फैसले और मोदी सरकार से पहले की हैं। अशोक गहलोत के दौर में एनफोर्समेंट नाकाम रहा, लेकिन मोदी सरकार इसे एकजुट और मजबूत कर रही है। अरावली बर्बाद नहीं हो रही, बल्कि 90 प्रतिशत संरक्षित है और खनन 0.19 प्रतिशत पर ही सीमित है।

अरावली भारत की सदाबहार प्राकृतिक धरोहर का प्रमाण है, और इसे बचाना राजनीतिक विभाजन से ऊपर एकजुटता मांगता है। साइंस, एनफोर्समेंट और रिस्टोरेशन को प्राथमिकता देकर मोदी सरकार इन पहाड़ियों की केवल रक्षा नहीं कर रही, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए हरा-भरा, ज्यादा मजबूत भविष्य सुनिश्चित कर रही है। तथ्यों को झूठ पर हावी होने दें- असली प्रगति को सेलिब्रेट करने और राष्ट्र के विकास के लिए सामूहिक जिम्मेदारी निभाने का समय है।

पारिस्थितिकी संतुलन को मिले प्राथमिकता

सुनीत बिश्नोई

अरावली पर्वतमाला का महत्व उसकी ऊंचाई, विस्तार या भौगोलिक उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके पारिस्थितिक कार्यों में निहित है, जो उत्तर भारत के जीवन-तंत्र को आधार प्रदान करते हैं। यह पर्वतमाला राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में भूजल पुनर्भरण की सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक प्रणाली है। इसकी प्राचीन चट्टानी संरचना वर्षा जल को रोककर धीरे-धीरे धरती के भीतर प्रवाहित करती है, जिससे कुएं, बावड़ियां, तालाब और भूजल स्रोत जीवित रहते हैं। ऐतिहासिक रूप से अरावली क्षेत्र में विकसित जल-संरक्षण प्रणालियां इस प्राकृतिक संरचना पर ही आधारित थीं। आज, जब उत्तर भारत भूजल स्तर और सूखते जलस्रोतों की समस्या से जूझ रहा है, तब अरावली का क्षरण सीधे तौर पर जल-सुरक्षा को कमजोर करता है। इसके अतिरिक्त, अरावली थार मरुस्थल के विस्तार को रोकने वाली एक प्राकृतिक दीवार के रूप में कार्य करती है। यदि यह दीवार कमजोर होती है, तो मरुस्थलीय रेत और धूल बिना किसी अवरोध के पूरब की ओर बढ़ेगी, जिससे दिल्ली-एनसीआर व गंगा के मैदान भी प्रभावित होंगे। यह प्रक्रिया कृषि उत्पादन, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आजीविका के लिए खतरा उत्पन्न करती है।

अरावली पर्वतमाला धूल भरी आंधियों और रेगिस्तानी कणों को राजस्थान से आगे बढ़ने से रोकने में प्राकृतिक अवरोध की भूमिका निभाती है। दिल्ली-एनसीआर जैसे क्षेत्र, जो पहले ही वायु प्रदूषण के गंभीर संकट से गुजर रहे हैं, अरावली के क्षरण से और अधिक असुरक्षित हो जाते हैं। बढ़ता प्रदूषण केवल वाहनों और औद्योगिक उत्सर्जन का परिणाम नहीं है, बल्कि प्राकृतिक संरचनाओं के नष्ट होने का भी प्रत्यक्ष प्रभाव है।

अरावली की वनस्पति और उसकी भू-आकृतिक बनावट धूल कणों को अवशोषित करके वायु की गुणवत्ता बनाए रखने में सहायक होती है। इसके साथ ही, अरावली क्षेत्र समृद्ध जैव विविधता का घर है, जहां असंख्य पक्षी, सरीसृप, स्तनधारी और वनस्पतियां पाई जाती हैं। ये पहाड़ियां विभिन्न वन्यजीव गलियारों को जोड़ती हैं और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखती हैं। खनन और पहाड़ियों की कटाई केवल पत्थरों का निष्कासन नहीं है, बल्कि पूरे पारिस्थितिक तंत्र का विघटन है। एक बार नष्ट हुई जैव विविधता को पुनः स्थापित कर पाना अत्यंत कठिन, बल्कि कई मामलों में असंभव होता है। इस प्रकार, अरावली का संरक्षण केवल पर्यावरणीय चिंता नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य और जैविक अस्तित्व से जुड़ा एक बहुत बड़ा प्रश्न बन जाता है, जिसे गंभीरता से लेना होगा।

इसी पृष्ठभूमि में अरावली की नई कानूनी और प्रशासनिक परिभाषा को लेकर गहरी चिंताएं उभरती हैं। यदि किसी पहाड़ी को केवल इस आधार पर संरक्षण से बाहर कर दिया जाए कि उसकी ऊंचाई आसपास की भूमि से 100 मीटर से कम है, तो यह प्रकृति को मात्र तकनीकी आंकड़ों में सीमित करने जैसा होगा। पर्यावरणीय संरचनाओं का महत्व उनकी ऊंचाई से नहीं, बल्कि उनके पारिस्थितिक कार्य से निर्धारित किया जाना चाहिए। अरावली क्षेत्र की लगभग 55 से 60 प्रतिशत पहाड़ियां इस श्रेणी में आती हैं, जिससे पर्वतमाला का एक बड़ा हिस्सा खनन, निर्माण और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए खुल सकता है। यह स्थिति इसलिए भी खतरनाक है, क्योंकि अरावली क्षेत्र में अवैध खनन और वन विनाश पहले से ही एक गंभीर समस्या रहे हैं। ऐसे में सीमित और संकीर्ण परिभाषाएं खनन माफिया और अवैध निर्माण को अप्रत्यक्ष वैधता प्रदान कर सकती हैं। इस संदर्भ में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या कानूनी स्पष्टता के नाम पर पर्यावरण संरक्षण की मूल भावना को कमजोर किया जा रहा है। यदि नीति निर्माण में पारिस्थितिक दृष्टिकोण के बजाय केवल प्रशासनिक सुविधा को प्राथमिकता दी गई, तो इसके दीर्घकालिक परिणाम विनाशकारी होंगे।

(लेखक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोधार्थी हैं)

Dainik Jagaran Page No-9

स्वच्छ जल के संरक्षण के प्रति गंभीरता जरूरी

सुधीर कुमार

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा जारी एक्वास्टेट जल डाटा स्नैपशाट-2025 के अनुसार, पिछले एक दशक के दौरान प्रति व्यक्ति स्वच्छ या ताजे जल की उपलब्धता में सात प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। पहले जहां प्रति व्यक्ति 5,719 क्यूबिक मीटर जल उपलब्ध था, वहीं यह घटकर अब 5,326 क्यूबिक मीटर रह गया है।

दरअसल कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र में स्वच्छ जल का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। वैश्विक स्तर पर स्वच्छ पानी की कुल निकासी का 72 प्रतिशत हिस्सा कृषि कार्य हेतु प्रयुक्त होता है। औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में ये आंकड़े महज 15 प्रतिशत और 13 प्रतिशत ही हैं। स्वच्छ जल कृषि की आधारशिला है, जहां मुख्य रूप से सिंचाई, कीटनाशक और उर्वरक के प्रयोग और पशुधन के पालन-पोषण आदि कार्यों में ताजे पानी की सर्वाधिक खपत होती है। हालांकि जलवायु परिवर्तन और बढ़ती जनसंख्या के समांतर

पिछले एक दशक के दौरान प्रति व्यक्ति स्वच्छ या ताजे जल की उपलब्धता में सात प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है

खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए कृषि हेतु बड़े पैमाने पर ताजे पानी का दोहन हो रहा है। एफएओ के अनुसार, एक व्यक्ति औसतन तीन लीटर पानी पीता है, लेकिन उसके प्रतिदिन के भोजन का उत्पादन करने में लगभग तीन हजार लीटर पानी लगता है। जाहिर है, खाद्य पदार्थों के उत्पादन में स्वच्छ जल का एक बड़ा हिस्सा इस्तेमाल किया जाता है।

स्वच्छ जल की कमी से न केवल मानव की पेयजल आवश्यकता अधूरी रह सकती है, बल्कि इसका असर कृषिगत उत्पादन पर भी पड़ सकता है, जिससे खाद्य असुरक्षा का संकट गहरा सकता है। स्वच्छ जल सुरक्षित और पौष्टिक भोजन का आधार है, जिसपर मानव का अस्तित्व टिका है। ऐसे में स्वच्छ जल पर मंडराता खतरा मानवता के लिए काल बन सकता है। स्वच्छ जल वैश्विक समुदाय के लिए एक आवश्यक संसाधन है। इसका विवेकपूर्ण इस्तेमाल इसलिए भी जरूरी है कि आज दो अरब लोग सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल की उपलब्धता से कोसों दूर हैं। कृषि में जल का कुशल उपयोग न केवल जल की बचत कर सकता है, बल्कि ऊर्जा संसाधनों को भी बचा सकता है और पैदावार में सुधार कर सकता है। कृषि में स्वच्छ जल का एकल इस्तेमाल ही संभव हो पाता है। ऐसे में सिंचाई के ऐसे तरीकों पर अपनाने की दरकार है, जो जल संरक्षण पर केंद्रित हों।

सिंचाई की ड्रिप और स्प्रिंकलर व्यवस्था को अपनाने, मृदा की गुणवत्ता का ध्यान रखने, वर्षा जल संग्रहण एवं संचयन पर जोर देने तथा जागरूकता के प्रसार से न केवल स्वच्छ जल का संरक्षण किया जा सकता है, बल्कि इसका इस्तेमाल मानवता के लिए सदियों तक किया जा सकता है। इस कीमती संसाधन की बर्बादी रोकने के प्रति गंभीर होने की भी जरूरत है।

(लेखक बीएचयू में शोधार्थी हैं)

Dainik Jagaran Page No-8

'दीवार में एक खिड़की रहती थी'... लिखने वाले साहित्यकार विनोद शुक्ल नहीं रहे

नईदुनिया प्रतिनिधि, रायपुर

साधारण जीवन की असाधारण अनुभूतियों को शब्दों में ढालने वाले 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' जैसे कालजयी उपन्यास के रचयिता और ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल का मंगलवार को रायपुर एम्स में निधन हो गया। वह 89 वर्ष के थे। लंबे समय से अस्वस्थ चल रहे शुक्ल को सांस लेने में तकलीफ के बाद दो दिसंबर को एम्स में भर्ती कराया गया था, जहां शाम करीब पांच बजे उन्होंने अंतिम सांस ली।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सहित साहित्य, कला और संस्कृति जगत की अनेक हस्तियों ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है। उनका अंतिम संस्कार बुधवार को राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। विनोद कुमार शुक्ल का जन्म एक जनवरी 1937 को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में हुआ था। छत्तीसगढ़ दौरे के दौरान पिछले महीने एक नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने

विनोद कुमार शुक्ल। इंटरनेट मीडिया

विनोद कुमार शुक्ल के स्वास्थ्य की जानकारी ली थी। शुक्ल के परिवार में उनकी पत्नी, बेटा शाश्वत और एक बेटी है। उन्होंने जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में सह-प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। उनकी रचनाओं की पहचान सरल भाषा, गहन संवेदना और जादुई यथार्थवाद रही।

सामान्य जीवन, अकेलेपन, उम्मीद और मानवीय रिश्तों को उन्होंने बेहद सहज लेकिन प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी लेखनी ने आम आदमी की जिंदगी को नई दृष्टि और संवेदना दी।

Dainik Jagaran Page No-5

अमेरिकी उपग्रह को आज अंतरिक्ष में ले जाएगा 'बाहुबली'

उलटी गिनती शुरू ▶ श्रीहरिकोटा से अगली पीढ़ी के अमेरिकी संचार सेटेलाइट को किया जाएगा प्रक्षेपित

एलवीएम3 राकेट से एलईओ में प्रक्षेपित किया जाने वाला सबसे भारी पेलोड होगा ब्ल्यूबर्ड ब्लाक-2

श्रीहरिकोटा, पेट्र : इसरो का 'बाहुबली' राकेट एलवीएम-3 अमेरिकी सेटेलाइट ब्ल्यूबर्ड- ब्लाक-2 को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए पूरी तरह से तैयार है। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने मंगलवार को बताया कि एलवीएम-3 एम6 मिशन के तहत होने वाले इस प्रक्षेपण के लिए 24 घंटे की उलटी गिनती शुरू हो गई है। लांच व्हीकल मार्क3 (एलवीएम3) भारत का सबसे शक्तिशाली राकेट है। इसलिए इस राकेट को बाहुबली राकेट भी कहते हैं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की योजना के अनुसार बुधवार को श्रीहरिकोटा के अंतरिक्ष केंद्र के से सुबह 8:54 बजे एलवीएम-3 एम6 राकेट नई पीढ़ी के अमेरिकी संचार सेटेलाइट ब्ल्यूबर्ड- ब्लाक-2 के साथ अंतरिक्ष के सफर पर रवाना होगा। यह एलवीएम3 की छठी परिचालन उड़ान होगी। लांचिंग के लगभग 15 मिनट बाद ब्ल्यूबर्ड ब्लाक-2 के राकेट से अलग होने की उम्मीद है। अगली पीढ़ी के इस संचार उपग्रह को एएसटी स्पेसमोबाइल के साथ हुए वाणिज्यिक समझौते के तहत लांच किया जाएगा।

इसरो ने कहा कि 6,100 किलोग्राम वजनी यह सेटेलाइट एलवीएम3 राकेट से लो अर्थ आर्बिट (एलईओ) में प्रक्षेपित किया जाने वाला सबसे भारी पेलोड होगा। इससे पहले सबसे भारी पेलोड एलवीएम-3-एम5 संचार उपग्रह सीएमएस-03 था। इसका वजन लगभग 4,400 किलोग्राम है। इसे इसरो ने दो नवंबर को लांच किया था। 4,410 किलोग्राम वजनी सीएमएस-03 भारत का सबसे भारी स्वदेशी संचार उपग्रह है।

कमर्शियल मिशन के तहत होगी ब्ल्यूबर्ड ब्लाक-2 की लांचिंग : ब्ल्यूबर्ड ब्लाक-2 की लांचिंग इसरो की कमर्शियल शाखा न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआइएल) के जरिये की जाएगी। इसके लिए अमेरिकी कंपनी एएसटी स्पेसमोबाइल (एएसटी एंड साइंस, एलएलसी) ने एनएसआइएल के साथ करार किया था।

दुनियाभर में बढ़ेगी डिजिटल कनेक्टिविटी : इस मिशन में अगली पीढ़ी के संचार उपग्रह को तैनाती से दुनियाभर में डिजिटल कनेक्टिविटी बढ़ेगी और स्मार्टफोन को 4जी और 5जी मोबाइल ब्राडबैंड सेवा सीधे मिल सकेगी।

पहला अंतरिक्ष-आधारित सेलुलर ब्राडबैंड नेटवर्क बना रही एएसटी स्पेसमोबाइल : एएसटी स्पेसमोबाइल कंपनी पहला और एकमात्र अंतरिक्ष-आधारित सेलुलर ब्राडबैंड नेटवर्क बना रही है, जिसका उपयोग स्मार्टफोनों द्वारा सीधे किया जा सकता है। इसे कमर्शियल तथा सरकारी उपयोगों के लिए डिजाइन किया गया है।

ब्ल्यूबर्ड ब्लाक-2 मिशन वैश्विक निम्न पृथ्वी कक्षा के सेटेलाइट के समूह का हिस्सा है, जिससे सेटेलाइट के माध्यम से सीधे मोबाइल कनेक्टिविटी सुविधा मिलेगी। इससे 4जी और 5जी वायस और वीडियो काल, टेक्स्ट, स्ट्रीमिंग हर वक्त संभव होगा। ब्ल्यूबर्ड ब्लाक-2 में 223 वर्ग मीटर का फेज्ड एरे है। यह पृथ्वी की निचली कक्षा में तैनात होने वाला सबसे बड़ा कमर्शियल संचार सेटेलाइट है।

एएसटी स्पेसमोबाइल 2024 में लांच किए थे पांच सेटेलाइट : एएसटी स्पेसमोबाइल सितंबर 2024 में पांच सेटेलाइट (ब्ल्यूबर्ड 1-5) को लांच किया, जो अमेरिका और अन्य कुछ देशों में निरंतर इंटरनेट कवरेज में मदद कर रहे हैं। अमेरिका स्थित इस कंपनी ने अपने नेटवर्क को बढ़ाने के लिए इसी तरह के सेटेलाइट को लांच करने की योजना बनाई है।

इसरो अध्यक्ष ने की वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में की पूजा : लांचिंग से पहले इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने मंगलवार को तिरुमाला के श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पूजा की।

बाहुबली प्रक्षेपण यान की खूबियां

- जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लांच व्हीकल (जीएसएलवी) एमके3 भी कहा जाता है
- 8000 किलोग्राम तक के पेलोड लोअर अर्थ आर्बिट (एलईओ) में ले जाने में सक्षम
- 2023 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतर चुका है 43.5 मीटर ऊंचा यह राकेट
- एलवीएम-3 ने चंद्रयान-2 और 72 उपग्रहों के साथ दो हनवेब मिशनों को भी लांच कर चुका है
- तीन चरणों वाला यह राकेट पिछले महीने स्वदेशी संचार उपग्रह सीएमएस-03 को कक्षा में ले गया था।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपण करने के लिए तैयार इसरो का लांच व्हीकल मार्क3 (एलवीएम3)। पेट्र

Dainik Jagaran Page No-7

श्रीलंका को 45 करोड़ डालर की वित्तीय मदद देगा भारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भारत ने चक्रवात दितवाह से प्रभावित श्रीलंका के लिए 45 करोड़ डालर की वित्तीय मदद की घोषणा की। हाल ही में आए इस चक्रवात से श्रीलंका में भारी तबाही हुई थी। पीएम नरेन्द्र मोदी के विशेष दूत के तौर पर मंगलवार को श्रीलंका की आधिकारिक यात्रा पर पहुंचे विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस पड़ोसी देश को वित्तीय मदद की घोषणा की। साथ ही कोलंबो के पुनर्निर्माण के लिए नई दिल्ली की दृढ़ प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया।

जयशंकर ने श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा दिसानायके, प्रधानमंत्री हरिनी अमरसूर्या, विदेश मंत्री बिजिथा हेराथ से मुलाकात की। वह श्रीलंका के स्वास्थ्य मंत्री, वित्त मंत्री के साथ भी मिले। उन्होंने नेता प्रतिपक्ष सजिथ प्रेमदासा, श्रीलंका के तमिल नेताओं और कारोबारी समुदाय के प्रतिनिधियों से भी अलग अलग बात की। इन सभी के साथ उन्होंने आपदा राहत, आर्थिक सहयोग व क्षेत्रीय स्थिरता पर चर्चा की।

- श्रीलंका के पीएम दिसानायके ने कहा- भारत-श्रीलंका संबंधों के नए युग की शुरुआत
- पीएम मोदी के विशेष दूत के तौर पर कोलंबो यात्रा पर हैं विदेश मंत्री जयशंकर

कोलंबो में मंगलवार को श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पत्र सौंपते विदेश मंत्री एस जयशंकर। पेट्र

राष्ट्रपति अनुरा दिसानायके से हुई मुलाकात में द्विपक्षीय व्यापार के साथ ही सीमा सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी विचार विमर्श हुआ है। राष्ट्रपति अनुरा दिसानायके ने भारत की तरफ से मदद की घोषणा को दोनों देशों के संबंधों में नए युग की शुरुआत के तौर पर चिन्हित किया है। पेट्र के अनुसार जयशंकर ने राष्ट्रपति दिसानायके को प्रधानमंत्री मोदी का पत्र सौंपा। पीएम मोदी ने श्रीलंका के प्रति एकजुटता जताई है। जयशंकर की इस यात्रा को श्रीलंका के आर्थिक संकट और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जा रहा है।

भारत और श्रीलंका के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त बयान भी जारी किया है जिसमें दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने पर जोर दिया। इन मुलाकातों में भारत ने श्रीलंका को 'आपरेशन सागर बंधु' के तहत पहले से दी जा रही मदद को बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई।

भारत की तरफ से 45 करोड़ डालर की जो पैकेज देने की घोषणा की गई है उसमें 35 करोड़ डालर रियायती ऋण के रूप में और 10 करोड़ डालर अनुदान के तौर पर दी जाएगी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि यह पैकेज श्रीलंका के साथ निकट परामर्श से तैयार किया गया है। इसमें बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण, स्वास्थ्य सेवाओं की बहाली और कृषि क्षेत्र की मदद शामिल है।

120 फीट लंबे डुअल कैरिजवे वेली ब्रिज का किया उद्घाटन

जयशंकर और उनके समकक्ष हेराथ ने राष्ट्रपति दिसानायके की उपस्थिति में उत्तरी प्रांत के किलिनोच्ची जिले में 120 फीट लंबे डुअल कैरिजवे वेली ब्रिज का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। यह क्षेत्र चक्रवात से सबसे गंभीर रूप से प्रभावित हुआ था। यह 110 टन वजनी पुल भारत से हवाई मार्ग द्वारा लाया गया था और इसे आपरेशन सागर बंधु के तहत स्थापित किया गया।

श्रीलंका की हमेशा से मदद करता रहा है भारत : भारत हमेशा से श्रीलंका की मदद करता रहा है। 2022 के आर्थिक संकट के दौरान भारत ने श्रीलंका को चार अरब डालर की मदद दी थी जिसमें ईंधन, दवाइयां व खाद्य सामग्री शामिल थी। यह राशि श्रीलंका की कुल जरूरतों का 80 प्रतिशत से अधिक कवर करती थी। इसके चलते ही श्रीलंका दीवालिया होने से बचा। 2025 तक भारत की मदद पांच अरब डालर से ऊपर पहुंच चुकी है। हालिया चक्रवात के दौरान भारत ने कुछ ही घंटों में 1100 टन राहत सामग्री वहां पहुंचा दी थी।

Dainik Jagaran Page No-3

Useful For Mains

अनदेखी की परतों में पलता प्रदूषण

देश के कई शहरों में धूल और धुएं की परत जनस्वास्थ्य के लिए संकट बन चुकी है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली दुनिया भर में तमाम देशों की राजधानियों में सबसे ज्यादा प्रदूषित है। इससे निपटने के लिए अब प्रभावी एवं कारगर उपायों की दरकार है।

रवि शंकर

उत्तर भारत एक बार फिर जहरीली हवा की गिरफ्त में है। लोगों के लिए सांस लेना तक मुश्किल हो गया है। धूल और धुएं की परत जनस्वास्थ्य के लिए संकट बन चुकी है। दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता सूचकांक कब गंभीर श्रेणी में पहुंच जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। हालांकि, इस गंभीर होती समस्या से पार पाने के लिए दिल्ली सरकार ने 'ग्रैप' के प्रावधानों को लागू करने समेत कई उपाय आजमाए, मगर वे कारगर साबित नहीं हो सके। पर्यावरण के लिए काम करने वाली संस्था ग्रीनपीस की एक रपट के मुताबिक, देश की राजधानी दिल्ली दुनिया भर में तमाम देशों की राजधानियों में सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर है। सवाल है कि पिछले कुछ वर्षों से लगातार इस संकट से जूझ रहे दिल्ली-एनसीआर को कोई स्थायी समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती? कागज पर भले ही सरकार ने वायु गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कई कदम उठाएं हैं, लेकिन इसके बावजूद प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। इससे पता चलता है कि हमारे यहां व्यवस्था प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कितनी कारगर है।

इस मामले में अगर हमारे पड़ोसी देश चीन की बात की जाए, तो वह भी कभी खतरनाक प्रदूषण से जूझ रहा था, मगर एक दशक के भीतर ही वह अपनी वायु गुणवत्ता में सुधार लाने में कामयाब रहा। सबसे अहम सवाल यह है कि तमाम मुश्किलों का सामना करने के बावजूद भारत दुनिया के दूसरे देशों से सबक क्यों नहीं ले रहा है। हालांकि प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए भारत ने कई उपाय किए हैं, लेकिन धीमी गति और जमीनी स्तर पर कमजोर प्रवर्तन की वजह से उनका प्रभाव सीमित ही रहा। वहीं, चीन ने प्रदूषण को राष्ट्रीय आपातकाल मानकर तेज गति से काम किया। चीन की इस सफलता में निगरानी ने एक बड़ी भूमिका निभाई। वहां एक व्यापक वायु निगरानी तंत्र बनाया गया, जो शहर-दर-शहर और यहां तक कि कारखानों से होने वाले प्रदूषण पर नियमित नजर रखता था। इससे उन्हें उत्सर्जन के स्रोतों का एक सटीक डेटा मिला और उसी के मुताबिक कार्रवाई की गई। इसी के साथ चीन ने अपनी परिवहन प्रणाली में भी बदलाव किया। बेजिंग जैसे शहरों में मेट्रो नेटवर्क का विस्तार किया गया, चौड़े पैदल यात्री क्षेत्र बनाए गए, निजी वाहन पर निर्भरता कम की गई और साथ ही सार्वजनिक परिवहन में निवेश किया गया। इसी के समांतर प्रदूषणकारी उद्योगों के प्रति भी चीन ने सख्ती दिखाई। ऐसे उद्योगों को स्वच्छ ईंधन और नवीकरणीय ऊर्जा की तरफ मोड़ कर कोयले पर निर्भरता को भी कम किया गया। गैस आधारित उपकरणों ने अनगिनत कोयला इकाइयों की जगह ली, जिस वजह से सल्फर उत्सर्जन में काफी कमी आई।

भारत की बात की जाए तो यहां अभी भी कोयले पर निर्भरता काफी ज्यादा है। जबकि चीन का उदाहरण दिखाता है कि मजबूत प्रवर्तन और एकीकृत सरकारी दृष्टिकोण से बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। गौर करने वाली बात यह है कि प्रदूषण से आबादी के लिहाज से सबसे ज्यादा नुकसान भारत को ही होता है, लिहाजा तत्काल कुछ सार्थक और ठोस उपाय करने की जरूरत है। देखा जाए तो आज के समय दुनिया में सबसे

ज्यादा बीमारियां पर्यावरण प्रदूषण की वजह से ही हो रही हैं। मलेरिया, एड्स और तपेदिक से हर साल जितने लोगों की मौत होती है, उससे कहीं ज्यादा लोग प्रदूषण से होने वाली बीमारियों के कारण दम तोड़ देते हैं। बहरहाल, सवाल यही उठता है कि वायु प्रदूषण से हर साल होने

> वायु प्रदूषण एक ऐसा मुद्दा है, जो पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है और इसे आपसी सहमति एवं ईमानदार प्रयास के बिना हल नहीं किया जा सकता है। इसके लिए तात्कालिक कार्रवाई के बजाय निरंतर प्रयासों की जरूरत है। स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाना, वाहनों की संख्या को नियंत्रित करना और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना जैसे उपाय दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकते हैं। पराली जलाने की समस्या को हल करने के लिए किसानों को बेहतर तकनीक और प्रोत्साहन प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे अधिक पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को अपनाएं।

वाली मौतों को रोकने के लिए सरकार की तरफ से क्या कदम उठाए जा रहे हैं? दशकों से यह बात सरकार और समाज सबको मालूम है, इसके बावजूद सामूहिक प्रयासों को गति नहीं मिल पा रही है। ऐसा लगता है कि लोग अपने त्रासदीपूर्ण भविष्य को लेकर जरा भी चिंतित नहीं हैं। जबकि देश में वायु प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल होती जा रही है कि भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा है।

दरअसल, आज मनुष्य भोगवादी जीवनशैली का इतना आदी और स्वार्थी हो गया है कि अपने जीवन के मूल आधार समस्त वायु को दूषित करने पर आमादा है। इस मामले में नैतिकता, धर्म, कर्तव्य सब पीछे छूट रहा है। भौतिकतावादी जीवनशैली और विकास की अंधी दौड़ में आज मनुष्य ये भी भूल गया है कि वायु प्रदूषण धीरे-धीरे कितना खतरनाक रूप धारण कर रहा है। बढ़ते वाहनों और कारखानों से निकलता धुआं, वृक्षों की कटाई और मनुष्य द्वारा फैलाई जा रही गंदगी हवा-पानी को इस कदर प्रदूषित कर रही हैं कि इससे बीमारियां भी दोगुनी गति से फैल रही है। मानवीय सोच और विचारधारा में इतना ज्यादा बदलाव आ गया है कि भविष्य की जैसे कोई चिंता ही नहीं है। इसमें कोई दोराय नहीं है कि अपने कृत्यों के कारण आज मनुष्य प्रकृति को रिक्त करता चला जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण असंतुलन से भूमंडलीय ताप, अम्लीय वर्षा, हिमनदों का पिघलना, समुद्र का जल-स्तर बढ़ना, मैदानी नदियों का सूखना, उपजाऊ भूमि का घटना और रेगिस्तानों का दायरा बढ़ना जैसी विकट परिस्थितियां उत्पन्न होने लगी हैं। ये सारा किया कराया मनुष्य का है, लेकिन अफसोस की बात है कि इसके घातक प्रभाव को झेलने के बावजूद हम अब भी नहीं चेत रहे हैं।

साल-दर-साल भारत में वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। चाहे केंद्र सरकार हो या राज्य सरकारें, या फिर हमारा समाज, कोई भी प्रदूषण से लड़ने के लिए गंभीर नजर नहीं आता है। अब समय आ गया है कि प्रदूषण से पार पाने के लिए सरकारी स्तर पर दीर्घकालीन नीतियां बनाई जाएं और उन्हें धरातल पर प्रभावी तरीके से लागू किया जाए। साथ ही लोगों को अपने स्तर पर वे सभी जतन करने की जरूरत है, जो हवा को जहरीली होने से रोकें। अब तक जो भी प्रयास हुए हैं, वे वायु प्रदूषण से निपटने में कारगर साबित नहीं हो पाए हैं। ऐसे में भारत की जिम्मेदारी बड़ी और ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो जाती है। हमें विकसित और विकासशील दोनों ही प्रकार के देशों में किए जा रहे उपायों से सीख लेने की जरूरत है।

वायु प्रदूषण पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है और इसे आपसी सहमति एवं ईमानदार प्रयास के बिना हल नहीं किया जा सकता है। इसके लिए तात्कालिक कार्रवाई के बजाय निरंतर प्रयासों की जरूरत है। स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाना, वाहनों की संख्या को नियंत्रित करना और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना जैसे उपाय दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकते हैं। पराली जलाने की समस्या को हल करने के लिए किसानों को बेहतर तकनीक और प्रोत्साहन प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे अधिक पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को अपनाएं। इसके साथ ही निर्माण स्थलों पर प्रदूषण-नियंत्रण उपायों का सख्ती से पालन और औद्योगिक उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए कड़े कानूनों की आवश्यकता है। एक व्यवस्थित निगरानी तंत्र से पूरे वर्ष वायु गुणवत्ता का मूल्यांकन करना जरूरी है, ताकि प्रदूषण के स्तर को समय रहते नियंत्रित किया जा सके। वास्तव में यह वक्त सिर्फ सोचने और चिंता करने का नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर कुछ ठोस उपाय करने का है।

अरावली का जीवन

पिछले कुछ समय से देश में खनन के औचित्य और इसके पर्यावरण पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर कई सवाल उठे हैं, लेकिन यह पूरा मसला विकास बनाम प्रकृति के संरक्षण के द्वंद्व में उलझ कर रह जाता है। इसमें कोई दोराय नहीं कि विकास की दिशा को बाधित करना प्रतिगामी हो सकता है, लेकिन सवाल यह है कि अगर प्रकृति के बेलगाम दोहन की कीमत पर दुनिया प्रगति का रास्ता अपनाती है, तो उसका हासिल क्या होगा। अरावली पर्वत-शृंखला को लेकर हाल ही में आए अदालती आदेश के आलोक में एक बार फिर यह बहस जोर पकड़ रही है कि अगर कोई प्राकृतिक संरचना एक बड़ी आबादी और इलाके के लिए जीवन-रेखा तथा सुरक्षा की एक मजबूत दीवार के रूप में मौजूद है, तो उसके संरक्षण के मुद्दे पर किसी जागरूक समाज की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए। गौरतलब है कि हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने यह व्यवस्था दी कि आसपास की जमीन से कम से कम सौ मीटर ऊंचे जमीन के हिस्से को ही अरावली पहाड़ी के तौर पर माना जाएगा।

अरावली को लेकर अदालत की इस नई परिभाषा के बाद यह आशंका खड़ी हो गई है कि अगर सौ मीटर से कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों पर खनन, निर्माण और व्यावसायिक गतिविधियों के रास्ते खुलेंगे, तो इसके बाद समूचे इलाके के पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर पर्यावरणीय प्रभाव सामने आ सकते हैं। दरअसल, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात से लेकर दिल्ली तक के सैकड़ों किलोमीटर के इलाके में फैली अरावली पर्वत शृंखला को समूचे उत्तर भारत में पर्यावरण को संतुलित रखने की दृष्टि से एक प्राकृतिक दीवार की तरह देखा जाता है। मगर पिछले कुछ दशकों से अरावली क्षेत्र को जिस तरह पत्थर, रेत और खनिज संसाधनों की मांग पूरी करने के लिए खनन का केंद्र बना दिया गया है, क्या उसके गंभीर खमियाजों का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता? हालांकि इस मसले पर उठे सवालों और विरोध के बाद केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने कहा कि खनन गतिविधि अरावली के कुल क्षेत्र में से केवल '0.19 फीसद हिस्से' में ही करने की इजाजत होगी। मगर खनन का दरवाजा एक बार खुल जाने के बाद यहीं तक सीमित रहेगा, इसकी क्या गारंटी है?

पिछले कुछ दशकों के दौरान जैसे-जैसे अरावली क्षेत्र में लोगों की गतिविधियां बढ़ी हैं, अपनी सुविधा और स्वार्थ में इस इलाके की प्राकृतिक संरचना को होने वाले नुकसान के सवाल की घोर अनदेखी हुई है। निर्बाध तरीके से बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, संगमरमर और धात्विक खनिजों की निकासी ने अरावली की पहाड़ियों और जंगलों पर विपरीत असर डाला और अब आसपास के शहरों की आबोहवा तथा भूजल के स्तर की हालत देखी जा सकती है। कुछ प्रत्यक्ष और घातक परिणामों के बावजूद आखिर अरावली के संरक्षण का सवाल सरकार की नजर में महत्त्वपूर्ण नहीं है तो इसके क्या कारण हैं? माना जाता है कि पश्चिमोत्तर भारत में भूजल का स्तर फिर से बहाल करने, रेगिस्तान बनने से रोकने और लोगों की रोजी-रोटी बचाने के लिए अरावली जरूरी है। इसलिए पर्यावरण विशेषज्ञ अरावली को उसके पर्यावरणीय, भूगर्भीय और जलवायु संबंधी महत्त्व की नजर से देखने और आंकने की जरूरत पर जोर देते रहे हैं। सच यह है कि एक ओर दुनिया भर में पारिस्थितिकी तंत्र और उसकी सुरक्षा के लिए हर स्तर पर चिंता जताई जा रही है, तो दूसरी ओर विकास के नाम पर चलने वाली कुछ कवायदों के पर्यावरण पर असर को लेकर कई तरह की आशंकाएं भी उभर रही हैं।

संवेदनहीनता की हद

चिकित्सक को भगवान का दूसरा रूप माना जाता है, क्योंकि वह अपने ज्ञान और कौशल से मरीजों का जीवन बचाने और उसे बेहतर बनाने का काम करता है। चिकित्सक को मरीज के शारीरिक कष्ट का ही नहीं, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति का भी ध्यान रखना होता है। ऐसे में चिकित्सक का व्यवहार और संवेदनशीलता कई मायनों में महत्त्वपूर्ण होती है। लेकिन कोई चिकित्सक अगर इलाज के दौरान आपा खोकर मरीज पर ही हमला कर दे, तो उसे क्या कहा जाएगा। हिमाचल प्रदेश के शिमला स्थित इंदिरा गांधी मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में सोमवार को ऐसा ही मामला सामने आया, जिसमें एक चिकित्सक ने मरीज के साथ बहस के बाद उसकी पिटाई कर दी। मामले ने तूल पकड़ा, तो अस्पताल प्रबंधन ने आरोपी चिकित्सक को निलंबित कर घटना की जांच शुरू कर दी। सवाल है कि अगर कोई मरीज असंतुलित व्यवहार भी करता है, तो क्या चिकित्सक का इस कदर आक्रामक होना उचित है? क्या उसका यह दायित्व नहीं है कि वह मरीज की मनोदशा समझकर संवेदनशील और संयमित तरीके से प्रतिक्रिया दे?

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों के अभाव का संकट बढ़ता जा रहा है, जिस कारण काम का दबाव भी बढ़ गया है। ऐसे में कई बार चिकित्सकों का व्यवहार सख्त हो सकता है, लेकिन उनसे मरीज के साथ मारपीट करने जैसी हरकत की अपेक्षा नहीं की जा सकती। शिमला के अस्पताल में जिस मरीज के साथ मारपीट की गई, वह फेफड़ों में तकलीफ की शिकायत लेकर वहां आया था। जांच के बाद सांस लेने में दिक्कत होने पर उसे अस्पताल में ही कुछ समय के लिए आराम करने की सलाह दी गई। इसके बाद वह एक वार्ड में खाली पड़े बिस्तर पर लेट गया और इसी को लेकर चिकित्सक के साथ उसकी बहस हो गई। सवाल है कि अगर कोई मरीज भर्ती हुए बिना अस्पताल के खाली पड़े बिस्तर पर कुछ देर आराम कर ले, तो उस पर किसी चिकित्सक को आपत्ति क्यों होनी चाहिए? चिकित्सक का प्राथमिक दायित्व मरीज के प्रति संवेदनशील होना और उसे राहत देने का होना चाहिए या नियम की दुहाई देकर उसे प्रताड़ित करने का? चिकित्सकों और प्रशासनिक अधिकारियों को इस पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

नए औद्योगिक क्षेत्र

बिहार में नई सरकार के गठन के साथ ही नए उद्योगों की स्थापना की दिशा में कई बुनियादी कार्य किए जा रहे। इसके पूर्व भी नीतीश सरकार ने उद्योगों के अनुकूल माहौल बनाने के लिए सतत प्रयास किए हैं। लगभग प्रायः जिलों में उद्योगों की स्थापना के लिए परिसर की व्यवस्था पर उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। इसके साथ-साथ अच्छी सड़कें और बिजली की उपलब्धता के मामले में काफी प्रगति हुई है। अब निवेशकों की चाहत को ध्यान में रखकर भी काम शुरू हुए हैं। इसी का उदाहरण है पटना के बख्तियारपुर और वैशाली के राजापाकर में नए औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना का प्रयास। कुछ निवेशकों ने इच्छा जताई थी कि उनके उद्यम राजधानी पटना के नजदीक हों। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बख्तियारपुर और राजापाकर में 1700 एकड़ में नया औद्योगिक क्षेत्र तैयार करने पर काम चल रहा है। इसके लिए बख्तियारपुर के तेलमर में 500 एकड़ जमीन का अधिग्रहण होगा। साथ ही राजापाकर में 1200 एकड़ जमीन के अधिग्रहण पर काम चल रहा है। यानी अब निवेशकों को उद्यम के लिए उनकी चाहत के अनुसार भी परिसर उपलब्ध कराए जा सकेंगे। विभाग को उद्योगों के लिए पूर्व से आवंटित जमीन की भी गहनता के साथ समीक्षा करनी चाहिए। यह देखने की जरूरत है कि जिस उद्देश्य से जमीन उपलब्ध कराई गई, वहां किस तरह की गतिविधि चल रही है। माहौल उद्यमियों के अनुकूल बने और साथ ही साथ उनपर नियंत्रण भी रहे, ऐसी कोशिश होनी चाहिए।

उद्यमियों के अनुकूल माहौल के साथ उद्देश्य आधारित नियंत्रण भी आवश्यक है

Dainik Jagaran Page No-8

बड़े खतरे के सामने बांग्लादेशी हिंदू

बांग्लादेश के मैमन सिंह जिले में हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की हत्या जिस बर्बर तरीके से की गई, वह इकलौती ऐसी घटना नहीं, जो इस देश में हिंदुओं की दुर्दशा और उनके समक्ष उभर रहे खतरे को दिखाती हो। वे लगातार खतरे में रहे हैं और आगे यह बढ़ता हुआ ही दिख रहा है। ऐसा नहीं है कि पिछले वर्ष अगस्त में शेख हसीना सरकार के तख्तापलट के बाद ही वहां के हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर आफत टूट पड़ी। सच यह है कि भारत विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान और फिर बांग्लादेश के हिंदू कभी चैन से नहीं रह पाए। भारत विभाजन के समय पूर्वी पाकिस्तान यानी आज के बांग्लादेश में हिंदुओं और विशेष रूप से दलित हिंदुओं की संख्या अधिक थी और इसका कारण दलित नेता जोगेंद्र नाथ मंडल थे। उन्होंने यह मानकर जिन्ना की मुस्लिम लीग का साथ दिया कि नए बने देश में दलित ज्यादा सुरक्षित और अधिकार संपन्न होंगे। उनका पूर्वी पाकिस्तान में अधिक प्रभाव था। मंडल पाकिस्तान के कानून मंत्री तो बने, लेकिन जिन्ना के निधन के साथ ही उनकी उपेक्षा और हिंदुओं की प्रताड़ना का सिलसिला कायम हो गया। मंडल तो इस्तीफा देकर चुपचाप कलकत्ता लौट आए, लेकिन उनके आश्वासन के चलते वहीं रहे गए हिंदू ठगे रह गए। हिंदुओं की प्रताड़ना पाकिस्तान के दोनों हिस्सों में होती रही। पूर्वी पाकिस्तान के हिंदुओं के भागकर भारत आने का जो सिलसिला कायम हुआ, वह कभी थमा नहीं। जब पूर्वी पाकिस्तान अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहा था, तब वहां से पलायन कर भारत आने वाली अधिकांश आबादी हिंदुओं की ही थी।

पूर्वी पाकिस्तान के बांग्लादेश बनने के बाद हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों ने चैन की सांस ली, लेकिन इस नए बने देश में भी उनकी प्रताड़ना कम नहीं हुई। कट्टरपंथी तत्व जब-तब उन्हें निशाना बनाते रहते। इसमें एक भूमिका शत्रु संपत्ति कानून की भी रही। इस कानून की आड़ में अल्पसंख्यकों की जमीनों पर कब्जा करना आसान था। यह कानून पाकिस्तान ने बनाया था, लेकिन बांग्लादेश बनने के बाद भी वह अस्तित्व में रहा। इस कानून के कारण हिंदुओं और बौद्धों की लाखों एकड़ भूमि कब्जाई जा चुकी है। अराजक तत्व फर्जी कागजों के जरिये उनकी संपत्ति को शत्रु संपत्ति बताकर उस पर कब्जा कर लेते हैं। अल्पसंख्यकों और विशेष रूप से हिंदुओं की जमीनों से जुड़े लाखों मुकदमे अदालतों में लंबित हैं। हालांकि शेख हसीना सरकार ने इस कानून में संशोधन किए, लेकिन वे अपर्याप्त साबित हुए। माना जाता है कि शेख हसीना की सरकार में हिंदू एवं अन्य अल्पसंख्यक अपने को सुरक्षित पाते थे, लेकिन यह एक हद तक ही सही है। उनके शासनकाल में भी हिंदुओं का उत्पीड़न होता था। इतना अवश्य है कि खालिदा जिया शासन के मुकाबले कुछ कम होता था। इस कारण वहां से हिंदुओं का पलायन कभी थमा ही नहीं। समर्थ हिंदू विदेश जाते रहे और गरीब भारत भाग आते रहे। शेख हसीना अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित करने वाले जमाते इस्लामी जैसे कट्टरपंथी समूहों के साथ जिहादी तत्वों को काबू में रखती थीं। उनकी सरकार के तख्तापलट बाद ऐसे तत्व वहां बेकाबू हैं और इसीलिए पिछले 16 महीनों से वहां उनका दमन बढ़ गया है। तख्तापलट के बाद बनी छात्रों की नई पार्टी एनसीपी और इंकलाब मंच जैसे राजनीतिक समूहों की विचारधारा जमाते इस्लामी के निकट ही है। पिछले दिनों मारा गया छात्र नेता उस्मान हादी इंकलाब मंच का ही था। वह कट्टर भारत विरोधी था।

राजीव सचान

यह सही है कि बांग्लादेश फिलहाल पाकिस्तान जैसा नहीं है, लेकिन अब उसके उस जैसा ही हो जाने की आशंका है

खुद को बचाने की गुहार लगाते बांग्लादेशी हिंदू। फाइल

बांग्लादेश के मौजूदा हालात वैसे ही खतरनाक दिख रहे हैं, जैसे शेख हसीना सरकार के तख्तापलट के बाद दिख रहे थे। उस दौरान हिंदुओं पर जमकर हमले हुए थे। उनके घरों, दुकानों के साथ मंदिरों को भी निशाना बनाया गया था। उस समय भी अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद युनूस ने अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए आश्वासन दिए थे और इस समय भी दे रहे हैं, लेकिन वे खोखले ही साबित हो रहे हैं। यह सही है कि बांग्लादेश फिलहाल पाकिस्तान जैसा नहीं है, लेकिन अब उसके उस जैसा ही हो जाने की आशंका है, क्योंकि एक तो फरवरी में चुनाव के साथ संविधान में बदलाव को लेकर भी जनमत संग्रह होना है और दूसरे ऐसे तत्व मुखर हो रहे हैं, जो बांग्लादेश को पूरी तरह इस्लामी देश बनाना चाहते हैं। कुछ तो शरीयत लागू करने की मांग कर रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों में बांग्लादेश में जिहादी तत्वों की संख्या बढ़ी है। वहां अलकायदा और इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी समूहों को समर्थन करने वाले तेजी से बढ़े हैं। मोहम्मद युनूस की सरकार ने ऐसे तत्वों पर लगाम लगाने के बजाय उन्हें जेल से रिहा करने का काम किया। ऐसा करके उन्होंने कट्टरता के उस जिन्न को बोतल से बाहर कर दिया, जिसे शेख हसीना बंद किए रहती थीं। इस कारण वहां बचे-खुचे सेक्युलर मूल्य भी खतरे में हैं। वहां महिलाओं को बुर्का पहनने के लिए कहा जा रहा है और गाना-बजाना हराम बताया जा रहा है। इसी कारण पिछले दिनों सांस्कृतिक केंद्र छायानट पर हमले के दौरान वाद्य यंत्र नष्ट कर दिए गए। बांग्लादेश में जैसे-जैसे भारत विरोध बढ़ रहा है, वैसे-वैसे हिंदुओं के लिए संकट भी बढ़ता जा रहा है। यदि कट्टरपंथी तत्व बांग्लादेश में नई बनने वाली सरकार में साझीदार बन जाते हैं तो वहां हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों के लिए जीना और दूभर हो जाएगा।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)
response@jagran.com

आवश्यक चुनाव सुधारों की प्रतीक्षा

हृदयनारायण दीक्षित

संसद के बीते सत्र में चुनाव सुधारों पर बहस तो हुई, लेकिन उसका केवल एसआइआर की प्रक्रिया तक सीमित रहना निराशाजनक रहा

संसदीय जनतंत्र की सारी कार्रवाई दलतंत्र से होती है। निष्पक्ष चुनाव जनतंत्र का आत्मा है। जनतंत्र की सफलता का दारोमदार दलतंत्र पर है। आदर्श चुनाव प्रक्रिया से ही कार्यपालिका और विधायिका बनती है। इसी चुनावी प्रक्रिया में लोग जनप्रतिनिधि चुनते हैं, पर चुनाव में धनबल और माफिया की भी भागीदारी है। इसलिए चुनाव आदर्श तरीके से नहीं हो पाते। निष्पक्ष चुनाव कराना निर्वाचन आयोग का संवैधानिक कर्तव्य (अनुच्छेद 324) है। मतदाता सूची तैयार करने और चुनाव कराने की जिम्मेदारी भी आयोग की ही है। सभी मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में सुनिश्चित करने के लिए विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) अभियान जारी है, पर इसे लेकर विपक्ष अकारण वोट चोरी का आरोप लगा रहा है। विपक्ष और उसके नेता निर्वाचन आयोग के अधीन हुए चुनाव में दो सीटों से चुनाव लड़े थे। वोट चोरी होती तो विपक्ष की भारी संख्या में सीटें न होतीं।

संसद में चुनाव सुधारों पर बहस अवश्य हुई, पर वह वास्तविक सुधारों को लेकर नहीं हुई। सारा ध्यान एसआइआर पर रहा। यह समझा जाना चाहिए कि चुनाव सुधारों की गति धीमी है। आदर्श चुनाव आचार संहिता 1967 में बनी थी। आचार संहिता का पालन सबका कर्तव्य है, मगर चुनाव अभियानों में अधिकांश दल आचार संहिता तोड़ते हैं। जनतंत्र में जन गण मन अपने भाग्य विधाता चुनते हैं, लेकिन चुनाव प्रक्रिया बाहुबल और धनबल के द्वारा सत्ता प्राप्ति का खेल बन गई है। राजनीतिक दल इस खेल में मुख्य खिलाड़ी हैं। दल अपने नियमित संचालन पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं, लेकिन विचार और कार्यकर्ता आधारित संगठन नहीं बनाते। चुनाव नजदीक आते ही जिताऊ प्रत्याशी की खोज शुरू हो जाती है। धनबल के दुरुपयोग होते हैं। खर्चीली रैलियां, होटल, वाहन और सैकड़ों चार्टर्ड विमान और आकाश में उड़ते हेलिकाप्टर चकित करते हैं। आखिरकार यह धन कहां से आता है? अधिकांश दल चुनाव में माफिया और धनबल का इस्तेमाल करते हैं। माफिया को टिकट देते हैं। अधिकांश दल पैसे वाले प्रत्याशी के साथ बाहुबली पर भी दांव लगाते हैं।

अपने देश में स्वस्थ-दलतंत्र का विकास नहीं हुआ। अनेक दलों में आजीवन/वंशानुगत राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। सभी दलों के संगठन चुनाव भी चुनाव आयोग को कराने के कानूनी प्रविधान होने चाहिए। उम्मीदवारों के पैनल भी स्थानीय समितियों, जिलों से होते हुए ऊपर आने चाहिए। जो दल अपने दल में जनतंत्र नहीं लाते, आय-व्यय का पूरा विवरण सार्वजनिक नहीं करते, चुनावी जीत के लिए माफिया/धनबली को उम्मीदवार बनाते हैं, उनसे ही चुनाव सुधारों की उम्मीद कैसे की जा सकती है? अब माफिया के निधन की स्थिति में पत्नी या पुत्र प्रत्याशी हो जाते हैं।

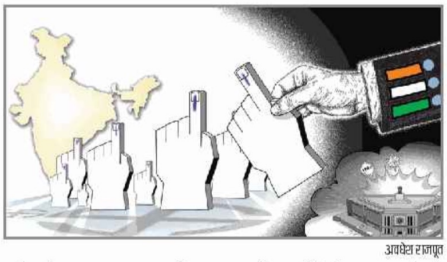

अवधेश राजपूत

प्रत्याशी चयन प्रक्रिया पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। वोहरा समिति (1993) ने संसदीय संस्थाओं में अपराधियों के प्रवेश पर चिंता व्यक्त की थी। चुनाव में कालेधन के प्रभाव और माफिया की पकड़ को घेरना जरूरी है। आखिर चुनाव सुधारों पर विचार क्यों नहीं होता? दलतंत्र के गलत आचरण से सुयोग्य कार्यकर्ता पार्टी टिकट नहीं पाते। चुनाव में अंधाधुंध खर्च होता है। निर्धारित खर्च की सीमा से दस गुना, बीस गुना से भी काम नहीं चलता। सरकार द्वारा चुनाव खर्च उठाने की बहस पुरानी है। दिनेश गोस्वामी समिति (1990) ने भी ऐसी ही सिफारिशें की थीं। चुनाव आयोग ने चुनाव को निष्पक्ष बनाने के लिए 2006 में दलीय परामर्श लिया था, लेकिन चुनाव सुधारों पर कोई ठोस पहल नहीं हुई। सुझाव यह भी था कि प्रत्याशी और दलों को अतिरिक्त खर्च से रोककर सरकारी खर्च पर चुनाव की व्यवस्था की जाए। मुख्य चुनाव आयुक्त ने इसे व्यावहारिक नहीं माना। इंग्लैंड, आयरलैंड आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा की सरकारें सीमित चुनाव खर्च देती हैं। अमेरिका में चुनाव का खर्च निजी क्षेत्र ही उठाते हैं।

राजनीति का अपराधीकरण रोकने के लिए भी बहुत काम करना शेष है। जो धनबल, बाहुबल, भ्रष्टाचार के सहारे चुनाव जीत जाते हैं, उनसे आशा कैसे की जा सकती है। माफिया जीतते हैं। मतदाता डरते हैं। पूंजीपति जिताऊ हैं। वे समर्थन खरीदते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पालिटिकल डायरी (पृष्ठ 146) में लिखा है, 'भारत में दल एक ही विचार करते हैं कि प्रत्याशी ऐसा हो जो चुनाव जीते।' उन्होंने सभी दलों से अपील की थी कि ईमानदार पार्टी कार्यकर्ता को ही टिकट देना चाहिए। अगर प्रत्याशी आदर्श कार्यकर्ता नहीं है तो उसे वोट न दें।

संविधान निर्माता भविष्य के चुनावी भ्रष्टाचार और उसके परिणामों के प्रति सतर्क थे। सभा (16.6.1949) में हृदयनाथ कुंजरु ने आशंका व्यक्त की कि दोषपूर्ण निर्वाचन की व्यवस्था से लोकतंत्र विषाक्त होगा। केएम मुंशी ने कहा था, 'भारत की जनता को अपने प्रतिनिधि संदेह और पक्षपात रहित स्वस्थ प्रणाली के माध्यम से चुनने का अधिकार होना चाहिए।' प्रस्तावक डा. बीआर आंबेडकर ने कहा था, 'मताधिकार ही जनतंत्र का प्राण है।' संविधान सभा ने निष्पक्ष निर्वाचन प्रक्रिया पर लंबी बहस की। उन्होंने निर्वाचन आयोग को संवैधानिक संस्था बनाया, लेकिन पहले आम चुनाव (1952) से ही निर्वाचन में धांधली शुरू हो गई। संविधान निर्माताओं की आशंका सच निकली। धांधली के आरोप प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सहित बड़े-बड़ों पर भी लगे। जिस देश में प्रधानमंत्री को भी चुनावी कदाचरण का दोषी पाकर सदन की सदस्यता खारिज की गई हो, उसी देश में चुनाव सुधारों की धीमी गति से निराश होना स्वाभाविक है। चुनाव सुधारों पर समग्रता से विचार की गति बहुत धीमी क्यों है? जब दुनिया के कई देश निष्पक्ष चुनाव प्रणाली बनाने और उसे लागू करने में कामयाब रहे हैं, तो दुनिया का सबसे बड़ा जनतंत्री देश होने और आदर्श चुनाव प्रणाली विकसित करने का श्रेय भारत क्यों नहीं लेता? चुनाव सुधारों का नेतृत्व निर्वाचन आयोग ही करे। अपराधियों को चुनाव से अलग रखने का सख्त कानून असंभव नहीं है। व्यापक चुनाव सुधार समूचे देश की अभिलाषा है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

विषय: भूगोल/पर्यावरण | **अरावली पर्वतमाला**
शब्द सीमा: ~400 शब्द

प्रश्न (BPSC Mains)

अरावली पर्वतमाला को भारत की "सदाबहार प्राकृतिक धरोहर" कहा जाता है। इसके पारिस्थितिक, जलवायु एवं सामाजिक-आर्थिक महत्व का विश्लेषण कीजिए। साथ ही इसके संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों तथा आवश्यक उपायों पर चर्चा कीजिए।

आदर्श उत्तर (Model Answer)

भूमिका

अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम पर्वत प्रणालियों में से एक है, जो गुजरात से दिल्ली तक फैली हुई है। यह उत्तर-पश्चिम भारत के पारिस्थितिक संतुलन, जल-सुरक्षा और मरुस्थलीकरण रोकने में निर्णायक भूमिका निभाती है।

I. अरावली का पारिस्थितिक एवं जलवायु महत्व

- **मरुस्थलीकरण अवरोधक:** थार मरुस्थल के पूर्ववर्ती विस्तार को रोकती है।
- **जल-संचयन तंत्र:** वर्षा जल का अवशोषण, भू-जल पुनर्भरण; अनेक नदियों (साबरमती, बनास, लूनी की सहायक धाराएँ) का उद्गम/पोषण।
- **जैव-विविधता हॉटस्पॉट:** शुष्क-पर्णपाती व कांटेदार वन; तेंदुआ, सियार, नीलगाय, अनेक पक्षी-प्रजातियाँ।
- **जलवायु नियमन:** धूल-आंधी कम करना, स्थानीय तापमान संतुलन।

II. सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व

- **आजिविका समर्थन:** वन-आधारित संसाधन, पशुपालन, इको-टूरिज़्म।
- **शहरी सुरक्षा:** दिल्ली-NCR के लिए "ग्रीन-लंग" की भूमिका।
- **ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत:** प्राचीन खनिज उपयोग, स्थापत्य व लोकसंस्कृति से जुड़ाव।

III. संरक्षण से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ

- **अवैध खनन एवं उत्खनन:** पहाड़ियों का क्षरण, जलस्रोतों का नाश।
- **तेज़ शहरीकरण/इन्फ्रास्ट्रक्चर:** सड़कें, रियल-एस्टेट दबाव।
- **वन क्षरण:** वृक्ष-आवरण में कमी, जैव-विविधता ह्रास।
- **नीतिगत/प्रवर्तन कमजोरियाँ:** नियमों का असंगत अनुपालन, निगरानी की क

IV. संरक्षण हेतु आवश्यक उपाय (Way Forward)

- **कानूनी सुदृढ़ीकरण:** संवेदनशील क्षेत्रों में सख़्त निषेध, प्रभावी प्रवर्तन।
- **पुनर्वनीकरण व देशी प्रजातियाँ:** जल-संग्रह संरचनाओं के साथ।
- **समुदाय-आधारित संरक्षण:** स्थानीय भागीदारी, वैकल्पिक आजिविका।
- **वैज्ञानिक योजना:** GIS/रिमोट-सेंसिंग से निगरानी; कैरींग-कैपेसिटी आधारित विकास।
- **अंतर-राज्य समन्वय:** समेकित अरावली संरक्षण कार्ययोजना।

निष्कर्ष

अरावली केवल पर्वतमाला नहीं, बल्कि उत्तर-पश्चिम भारत की पारिस्थितिक जीवनरेखा है। संतुलित विकास, कठोर संरक्षण और समुदाय सहभागिता के माध्यम से ही इस "सदाबहार प्राकृतिक धरोहर" को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।